स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर ध्वजारोहण करते हुए श्री विशाल बंसल
प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी) हरियाणा।

स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर आमन्त्रित
अतिथिगण एवं अन्य अधिकारीगण

नवकिरण परिवार

पत्रिका का नाम	:	नवकिरण
प्रकाशन की अवधि	:	अर्द्धवार्षिक
वर्ष	:	2018
अंक	:	सैंतीसवाँ
संरक्षक	:	श्री विशाल बंसल
प्रकाशन	:	श्री मृणाल चावला
प्रबन्धन	:	श्री नेक राम भाटिया
सम्पादक	:	श्री कुमार शर्मा 'अनिल'
सह-सम्पादक	:	श्री राजेश 'पंकज' श्री संजीव कुमार श्री रविन्द्र सिंह
प्रकाशन स्थल	:	कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) हरियाणा, लेखा भवन, प्लाट नं 4-5, सैक्टर 33-बी, चण्डीगढ़।
मुखपृष्ठ	:	हरविंदर सिंह
मुद्रक	:	संजोग पब्लिशर्स, बूथ नं. 236, सैक्टर 34-सी, चण्डीगढ़
मूल्य	:	पाठकों की राजभाषा के प्रति निष्ठा

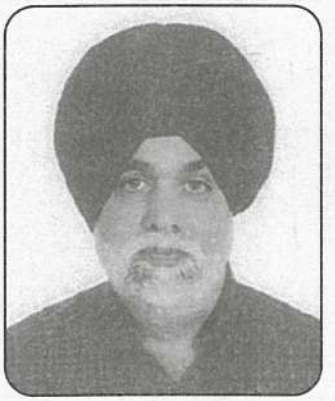

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि आपका कार्यालय हिन्दी पत्रिका 'नवकिरण' का 37 वाँ अंक प्रकाशित करने जा रहा है । इस उप्लब्धि के लिए 'नवकिरण' पत्रिका परिवार के सभी सदस्य एवं रचनाकर बधाई के पात्र हैं ।

हिन्दी भाषा आज केवल भारत में ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व में अपना एक विशिष्ट स्थान रखती है, संयुक्त राष्ट्र में भी हिन्दी को आधिकारिक भाषा बनाने के पुरजोर प्रयास किये जा रहे हैं । आज विदेशों में बसे भारतीय विदेशी भाषाओं के साथ-साथ हिन्दी भाषा का भी प्रचुर उपयोग करते हैं, जो हमारे लिए गर्व की बात है ।

राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में कार्यालयों द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिकाओं का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है, क्योंकि इन पत्रिकाओं के माध्यम से विभागीय प्रतिभाएं तो सामने आती ही हैं, साथ ही साथ कार्यालय की प्रत्येक गतिविधि का विवरण भी पूरे देश में प्रेषित हो जाता है और हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए सकारात्मक वातावरण तैयार होता है । अत: यह हम सभी का दायित्व है कि हम राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में गति लाएं ।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि 'नवकिरण' पत्रिका का यह अंक भी अपने पूर्व अंकों की भाँति कार्मिकों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति के साथ-साथ राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में एवं इसके प्रति अभिरूचि और जागरूकता का वातावरण बनाने में प्ररेणादायी सिद्ध होगा ।

पत्रिका के सफल एवं निरंतर प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं ।

जगबन्स सिंह

(जगबन्स सिंह)

प्रधान महालेखाकार (लेखा परीक्षा)

पंजाब, चण्डीगढ़

संदेश

हिंदी हमारे राष्ट्र का गौरव है। विश्व की उन्नत भाषाओं में इसकी गणना की जाती है अतः इसके व्यापक प्रचार-प्रसार के लिए सामूहिक प्रयास आवश्यक है। विभागीय पत्रिकाएं भी इस दिशा में किया गया एक प्रयास है। इससे न केवल हिंदी के प्रति रूझान बढ़ा है बल्कि एक सकारात्मक वातावरण भी तैयार हुआ है। यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'नवकिरण' के 37वें अंक का प्रकाशन होने जा रहा है। कार्यालय की गतिविधियों के बारे में अवगत कराने वाली यह पत्रिका विभिन्न कार्यालयों के मध्य सेतु का काम करेगी।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका का यह अंक भी पूर्व प्रकाशित अंकों की भांति सृजनात्मकता से भरपूर होगा एवं राजभाषा हिंदी के विकास में सहायक होगा।

पत्रिका के सफल प्रकाशन तथा उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

नमिता सेखो

नमिता सेखों

प्रधान महालेखाकार (लेखा परीक्षा),

हरियाणा, चण्डीगढ़।

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है, कि आपके कार्यालय की पत्रिका 'नवकिरण' के 37वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है । यह स्वयं में 'नवकिरण' पत्रिका की सुदीर्घ यात्रा का परिचायक है ।

हिन्दी पत्रिकाओं का राजभाषा के प्रचार – प्रसार में अतुलनीय योगदान रहा है । राजभाषा 'हिन्दी' का प्रचार – प्रसार एवं विकास प्रत्येक नागरिक का उत्तरदायित्व है । आपके कार्यालय की पत्रिका 'नवकिरण' का प्रकाशन इसी दिशा में समर्पित, समुचित, एवं लक्ष्यनिष्ठ प्रयास है। मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका अपने प्रगति – पथ पर निरंतर अग्रसर रहते हुए राजभाषा हिंदी के प्रचार – प्रसार तथा कार्यालय की रचनात्मक प्रतिभाओं को उजागर करने के अपने प्रमुख लक्ष्य को प्राप्त करने में पूर्णतः सफल रहेगी । पत्रिका प्रकाशन हेतु कार्यरत सहयोगी अधिकारियों और कर्मचारियों का अथक परिश्रम सराहनीय है ।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं सफलता के लिए हार्दिक शुभकामनाएं ।

(समर कांत ठाकुर)

महा निदेशक, लेखा परीक्षा, (रक्षा सेवाएं)

चण्डीगढ़

संदेश

यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि आपका कार्यालय हिन्दी पत्रिका 'नवकिरण' का 37वां अंक शीघ्र ही प्रकाशित करने जा रहा है। इसके लिए मैं पत्रिका से जुड़े सभी सदस्यों एवं रचनाकारों को हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

हिन्दी केवल हमारी राजभाषा ही नहीं है बल्कि पूरे देश की संपर्क भाषा भी है और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी अपना विशेष स्थान बना चुकी है। हिंदी की इस विकास यात्रा में हिन्दी पत्र-पत्रिकाएं अपनी अहम् भूमिका निभाते हुए हमारे संवैधानिक दायित्व के निर्वहन में सहयोग कर रही है। हिन्दी के प्रति निष्ठा जगाने में विभागीय पत्रिकाओं का महत्त्व दिन प्रतिदिन बढ़ रहा है।

मैं पुनः पत्रिका को प्रकाशित करने वाले समूह को हार्दिक बधाई देता हूँ, जिनके निरंतर प्रयास ने पत्रिका को सफलता का नया मुकाम दिया है।

मुझे आशा है कि राजभाषा के प्रति अपने कर्त्तव्यों के निर्वाहन में 'नवकिरण' सदैव अग्रसर रहेगी।

सादर,

आपका सदाशयी,

संदीप लाल

प्रधान निदेशक लेखा परीक्षा (केन्द्रीय)

चण्डीगढ़

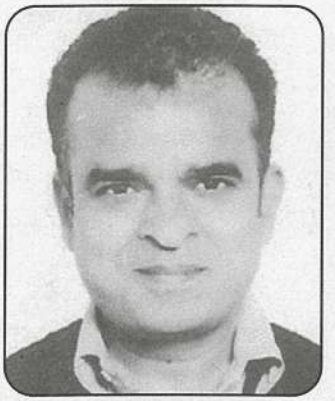

संदेश

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'नवकिरण' के 37 वें अंक के प्रकाशन पर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है।

विभागीय कार्यालयों में प्रकाशित होने वाली प्रत्येक हिंदी पत्रिका उस कार्यालय की रचनात्मक व सांस्कृतिक गतिविधियों का आईना होती है। यह न केवल कार्यालय में हिन्दी के कार्यान्वयन को प्रतिबिंबित करती है, बल्कि उन प्रतिभाओं को भी अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान करती है जो राजभाषा हिंदी के उद्देश्यों व लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए प्रतिबद्ध हैं। आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'नवकिरण' ने भी इस दिशा में नए आयाम स्थापित करने के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों व कर्मचारियों को अपने विचारों व उद्गारों की अभिव्यक्ति हेतु सार्थक मंच प्रदान किया है। मैं इसके लिए आपको साधुवाद देता हूँ।

मेरी ओर से सभी रचनाकारों के साथ-साथ संपूर्ण पत्रिका परिवार को भी पत्रिका के उत्तम संपादन तथा सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

'नवकिरण' इसी प्रकार रचनात्मक उत्कर्ष के नए कीर्तिमान रचती रहे, ऐसी मेरी मंगल कामना है।

फ़ैसल

फ़ैसल इमाम

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)

पंजाब, चण्डीगढ़।

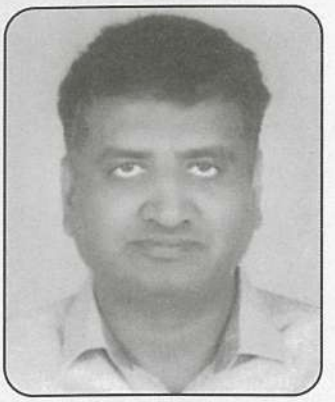

संदेश

कार्यालय की हिन्दी पत्रिका ''नवकिरण'' के 37वें अंक के प्रकाशन पर मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है। कार्यालय में राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्मिकों एवं उनके परिवारजनों को रचनात्मक मंच प्रदान करने में पत्रिका ने अत्यन्त महत्वपूर्ण योगदान प्रदान किया है।

विभागीय हिन्दी पत्रिकाओं ने राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण तथा निर्णायक भूमिका अदा की है। 'नवकिरण' ने भी कार्यालय में हिन्दी के प्रति सकारात्मक माहौल बनाने में उल्लेखनीय योगदान दिया है। पत्रिका उच्च साहित्यिक मूल्यों, कार्यालयीन सामग्री से युक्त एवं सूचनापरक है।

मैं उन सभी रचनाकारों को हार्दिक बधाई देता हूँ जिन्होंने इस पत्रिका हेतु बड़ी लगन से अपनी रचनाएं प्रस्तुत की हैं। संपादक एवं प्रबन्धक मंडल को भी मैं हार्दिक बधाई देता हूं जिन्होंने बड़ी निष्ठा से राजभाषा हिन्दी के प्रति अपने कर्त्तव्यों को निभाया।

मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका 'नवकिरण' का यह अंक कार्मिकों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति के साथ-साथ राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में भी सहायक होगा।

शुभकामनाओं सहित।

विशाल बंसल

विशाल बंसल

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी),

हरियाणा, चण्डीगढ़

प्रतिक्रियाएं

पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएं पठनीय तथा उत्कृष्ट है साथ ही पत्रिका का आवरण पृष्ठ आकर्षक हे । विशेष रूप से सुधीर शर्मा का लेख 'चिकित्सक का जन्म', रविन्द्र सिंह का संस्मरण 'असम: एक अनोखा अनुभव' व राजेश 'पंकज' का लेख 'पुनर्मिलन' रचनाएं ज्ञानवर्धक तथा सराहनीय हैं । पत्रिका के समस्त रचनाकारों व सम्पादक मण्डल को पत्रिका के सफ़ल सम्पादन व प्रकाशन के लिए बधाई ।

हिन्दी अधिकारी,
महालेखाकार (आ रा क्षे ले प) का कार्यालय, केरला,
तिरूवनंतपुरम ।

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिन्दी पत्रिका ''नवकिरण'' के 36वें अंक की प्राप्ति हुई है । पत्रिका का आवरण पृष्ठ बड़ा ही आकर्षक बना है एवं पत्रिका में निहित सभी रचनाएं अत्यन्त ही उच्च श्रेणी की हैं । पत्रिका के सफ़ल संपादन एवं प्रकाशन हेतु संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका के उज्जवल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं ।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी / हिन्दी प्रकोष्ठ,
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) झारखण्ड का कार्यालय,
राँची ।

आपके कार्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु प्रकाशित हिंदी पत्रिका ''नवकिरण'' के 36वें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई । रचनात्मकता से परिपूर्ण पत्रिका का मुखपृष्ठ अत्यन्त ही मनोरम व मनमोहक है । पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएं रूचिकर एवं सराहनीय हैं ।

उदय प्रताप सिंह
हिंदी अधिकारी / हिंदी कक्ष,
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक) का कार्यालय,
कर्नाटका, बैंगलूर ।

पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख, कविताएं उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक तथा पठनीय हैं । विशेषकर कुमार शर्मा 'अनिल' का लेख ''हरामी'', श्री आलोक शर्मा की कविता 'आदमी और जानवर', श्रीमती मनजीत शर्मा 'मीरा' का लेख ''गुल्लु की गुल्लक'', श्री राधाकृष्ण का लेख ''शिष्टाचार'', श्री अमरजीत 'अमर' की ''गज़लें'', श्री सुरेन्द्र कुमार का लेख ''कौन सा बटन दबाऊं'', श्री अनंत शर्मा 'अनंत' की कविता ''अखबार का हाकर'', श्री कुलदीप मेहता की कविता ''यूं ही नहीं मिलती मंजिलें'', श्री नरेन्द्र बड़गुजर की कविता ''शिक्षा'', कु. मधु की कविता ''मधु'', श्रीमती राजकुमारी का लेख ''तुलना-दुखों का घर'', श्री चांद सिंह की कविता ''आंसू'', श्री बालबिहारी प्रजापति की कविता ''रामसेतू'', श्री संदीप कुमार 'मान' की कविता ''भारत माता'', श्री राजेन्द्र शर्मा का लेख ''सुखद जीवन के गुर'', श्री धर्मवीर भारद्वाज की कविता ''यात्रा'' आदि सभी रचनाएं रुचिकर एवं पठनीय हैं । कार्यालयीन चित्रों ने पत्रिका की सुंदरता को और निखारा है ।

वी एस रेड्डी
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी,
महालेखाकर (लेखापरीक्षा) - 2, महाराष्ट्र का कार्यालय, नागपुर ।

पत्रिका में सम्मिलित की गई सभी रचनाएं पठनीय, ज्ञानवर्धक व रोचक हैं । कविताएं विशेषकर ''भारत माता'', ''यात्रा'', ''भिखारी'', ''कविता के रिश्ते'', ''आंसू'' सराहनीय हैं । लेख ''चिकित्सक का जन्म'' बहुत ही मनोरंजक एवं रोचक है। ''हरामी'' हृदय को झकझोर देने वाली मार्मिक कहानी है । लेख ''स्वच्छ भारत अभियान'' स्वच्छता के प्रति जागरूक

करता है । संस्मरण ''असम : एक अनोखा अनुभव'' पर्यटन की दृष्टि से उपयोगी रोचक लेख है । ''राजभाषा हिन्दी का प्रगामी प्रयोग'' एवं ''हिन्दी पखवाड़ा - 2017 का प्रतिवेदन'' सराहनीय हैं । पत्रिका के सफ़ल संपादन तथा प्रकाशन हेतु संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्जवल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं ।

देवमणि मिश्र
वरिष्ठ लेखा अधिकारी/हिन्दी,
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) - द्वितीय,
उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद ।

पत्रिका का मुद्रण एवं प्रकाशन उत्तम है । आवरण पृष्ठ मनमोहक है । संकलित सभी लेख एवं रचनाएं सरस, ज्ञानवर्धक एवं पठनीय हैं । विशेषरूप से डा. सुभाष रस्तोगी की 'कविता के रिश्ते', के के नन्दा 'अश्क' की 'गज़ल' तथा नरेन्द्र बड़गुजर की 'शिक्षा' कविताएं उत्तम एवं प्रशंसनीय हैं । मनजीत शर्मा 'मीरा' की कहानी 'गुल्लू की गुल्लक' तथा रवि कान्त मीणा का लेख 'स्वच्छ भारत अभियान' अत्यन्त सराहनीय हैं । पत्रिका के उत्तम सम्पादन एवं संकलन हेतु संपादक मण्डल व रचनाकर बधाई के पात्र हैं ।

लेखा अधिकारी / हिन्दी,
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) - प्रथम,
उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद ।

पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक, शिक्षाप्रद व प्रशंसनीय हैं । पत्रिका में समाहित रचनाएं विशेषकर - मनजीत शर्मा 'मीरा' द्वारा रचित 'गुल्लू की गुल्लक', राजेश 'पंकज' द्वारा रचित 'पुनर्मिलन', कुलदीप कुमार मेहता द्वारा रचित 'यूं ही नहीं मिलती मंजिलें', मधु कंसल द्वारा रचित 'मधु' और सरताज सिंह 'मुसाफिर' द्वारा रचित 'ग़जलें' बहुत अच्छी लगी । अन्य विभिन्न लेख और कवितायें भी रोचक हैं तथा अर्थ से भरी हुई हैं । पत्रिका के कुशल संपादन के लिए हार्दिक बधाई एवं उज्जवल भविष्य के लिए शुभकामनाएं ।

वरिष्ठ लेखा अधिकारी/राजभाषा,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) - 1,
महाराष्ट्र, मुंबई ।

कार्यालय के भवन से सजा मुख पृष्ठ अत्यंत सुंदर एवं मनोहारी है । पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं जैसे चिकित्सक का जन्म, शिष्टाचार, पुनर्मिलन, आतंकवाद और समाज, तुलना दु:खों का घर और सुखद जीवन के गुर तथा कविता के रिश्ते, आदमी और जानवर, प्रभु की याद, मेरा सपना, भारत माता और भिखारी कविताएं अत्यंत रोचक व उत्कृष्ट हैं । हिन्दी के प्रचार - प्रसार के लिए व पत्रिका के प्रकाशन हेतु आपका पत्रिका परिवार बधाई का पात्र है ।

(मेरि व्ही अलेक्झांडर)
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशासन,
प्रधान महालेखाकार का कार्यालय (लेखा परीक्षा) - 3,
महाराष्ट्र, मुंबई ।

इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं पाठकों के लिए प्रभावशाली, रोचक, ज्ञानवर्धक, उच्चकोटि एवं मन को लुभाने वाली हैं । पत्रिका में संकलित कुमार शर्मा 'अनिल' जी की कहानी ''हरामी'', सुश्री मनजीत शर्मा 'मीरा' जी की कहानी 'गुल्लू की गुल्लक', सुश्री नीतू सिंह जी का लेख 'आतंकवाद और समाज', श्री कुलदीप कुमार मेहता जी की कविता 'यूं ही नहीं मिलती मंजिलें', सुश्री सुक्षिती नंदा जी की 'मेरा सपना' और डॉ. सुभाष रस्तोगी जी की कविता 'कविता के रिश्ते' पत्रिका में विशेष रूप से सराहयनीय हैं । पत्रिका की साज सज्जा भी उत्तम है । हिन्दी की सार्थकता के लिए प्रयासरत आपकी पत्रिका 'नवकिरण' के उज्जवल भविष्य के लिए 'सुगन्धा' परिवार की हार्दिक शुभकामनाएं ।

हिन्दी अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) पंजाब, चण्डीगढ़

पत्रिका की संपूर्ण सामग्री प्रसंशनीय है । सम्पादक मण्डल द्वारा जो प्रयास किया गया है, वास्तव में प्रशंसनीय है । सुधीर शर्मा का लेख 'चिकित्सक का जन्म' हास्य रस से ओत-प्रोत है । कुमार शर्मा 'अनिल' की कहानी 'हरामी', के के नन्दा 'अश्क की ''गजल'', कुलदीप कुमार मेहता की कविता ''यूं ही नहीं मिलती मंजिलें'' एवं रविन्द्र सिंह का संस्मरण ''असमः एक अनोखा अनुभव'' ये सारी रचनाएं उल्लेखनीय हैं । पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफ़ल प्रकाशन के लिए बधाई ।

विनय कुमार गर्ग
सहायक लेखा अधिकारी (हिन्दी कक्ष),
कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी) पंजाब एवं यूटी,
चण्डीगढ़ ।

पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं आंतरिक साज-सज्जा आकर्षक है । श्री सुधीर शर्मा जी का लेख 'चिकित्सक का जन्म' सचमुच ही एक रोचक लेख है । 'गुल्लू की गुल्लक', 'शिष्टाचार', 'पुनर्मिलन', 'कौन सा बटन दबाऊँ', 'असम : एक अनोखा अनुभव, 'तुलना-दुखों का घर', 'सुखद जीवन के गुर' आदि रचनाएं भी उल्लेखनीय हैं । विभिन्न गतिविधियों के छायाचित्रों के समावेश से पत्रिका की शोभा में वृद्धि हुई है । आपकी यह पत्रिका श्रेष्ठ संपादन कला तथा कार्यालयीन गतिविधियों का परिचय देती है ।

संगीता वशिष्ठ
प्रभारी (राजभाषा अनुभाग)
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, चण्डीगढ़

पत्रिका का आवरण पृष्ठ, पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र एवं सभी रचनाएं अत्यन्त ज्ञानवर्धक, नीतिपरक एवं रोचक हैं । कविताएं एवं लेख भी भावपूर्ण, सार्थक तथा मन को छू लेने वाली हैं । श्री कुमार शर्मा 'अनील' जी द्वारा लिखित कहानी 'हरामी' बहुत प्रासंगिक है । श्रीमती मनजीत शर्मा 'मीरा' जी द्वारा लिखित कहानी 'गुल्लू की गुल्लक', श्रीमती राजकुमारी जी द्वारा लिखित कहानी 'तुलना-दुःखों का घर' एवं श्री चांद सिंह जी द्वारा लिखित कविता 'आँसू' सर्वाधिक रोचक एवं शिक्षाप्रद है । पत्रिका के संपादक मण्डल, रचनाकारों के सफ़ल संपादन एवं लगातार प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई तथा पत्रिका के उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएं ।

आलोक सिंह
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिन्दी कक्ष),
कार्यालय महालेखाकार (आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखापरीक्षा),
पश्चिम बंगाल, कोलकाता ।

पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं उच्चकोटि की एवं ज्ञानवर्धक हैं । पत्रिका का प्रस्तुत अंक हमेशा की तरह सराहनीय, पठनीय एवं संग्रहणीय है । श्री अनंत शर्मा 'अनंत' की रचना 'अखबार का हाकर', सुश्री नीतू सिंह का लेख 'आतंकवाद और समाज', की कुलदीप कुमार मेहता की रचना 'यूं ही नहीं मिलती मंजिलें', श्री चांद सिंह की रचना 'आँसू' एवं श्री संदीप कुमार 'मान' की रचना ''भारत माता'' बहुत ही प्रशंसनीय हैं ।

सहायक लेखाअधिकारी/राजभाषा कक्ष,
कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हक),
राजस्थान, जयपुर ।

आपके कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने प्रशंसनीय लेख एवं सुन्दर कवितायें लिखने का सराहनीय प्रयास किया है । श्री सुधीर शर्मा द्वारा लिखित 'चिकित्सक का जन्म', श्री के के नंदा 'अश्क' द्वारा लिखित 'गज़ल', श्री कुलदीप कुमार

मेहता द्वारा 'यूं ही नहीं मिलती मंजिलें' और श्रीमती पुष्प लता गणेश की 'भिखारी' सराहनीय व प्रशंसनीय हैं।

आर वैद्यनाथन
उप महालेखाकार (प्रशा),
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (आ एवं रा क्षे ले प),
गुजरात, अहमदाबाद ।

पत्रिका का मुख पृष्ठ अत्यंत सुन्दर है । पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं पठनीय, ज्ञानवर्धक एवं संग्रहणीय हैं । विशेषकर श्री सुधीर शर्मा की 'चिकित्सक का जन्म', सुश्री नीतू सिंह जी की 'आतंकवाद और समाज', श्री रवि कान्त मीणा की 'स्वच्छ भारत अभियान', सुश्री राजकुमारी की 'तुलना - दु:खों का घर', श्री सुरेन्द्र कुमार की 'कौन सा बटन दबाऊँ' एवं श्री बाल बिहारी प्रजापति की 'रामसेतू' विचार प्रधान, प्रेरक, एवं जीवनोपयोगी रचनाएं हैं । पत्रिका के संपादन एवं संकलन हेतु संपादक मण्डल को साधुवाद तथा पत्रिका की अबाध प्रगति हेतु शुभकामनाएं।

स्निग्धा
वरि लेखापरीक्षा अधिकारी / हिन्दी प्रकोष्ठ,
महालेखाकार (सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र लेखापरीक्षा) का कार्यालय,
ओडिशा, भुवनेश्वर ।

पत्रिका का आवरण पृष्ठ, रूपसज्जा, छायाचित्र एवं उसमें समाहित रचनाएं अत्यन्त रोचक तथा ज्ञानवर्धक हैं । प्रकाशित रचनाओं में मुख्यत: सुधीर शर्मा की रचना 'चिकित्सक का जन्म', कुमार शर्मा 'अनिल' की रचना 'हरामी', आलोक शर्मा की रचना 'आदमी और जानवर', राधा कृष्ण की रचना 'शिष्टाचार', सुरेन्द्र कुमार की रचना 'कौन सा बटन दबाऊँ', अनंत शर्मा अनंत की रचना 'अखबार का हाकर', नीतू सिंह की रचना 'आतंकवाद और समाज', रविकान्त मीणा का लेख 'स्वच्छ भारत अभियान', संदीप कुमार मान की रचना 'भारत माता', धर्मवीर भारद्वाज की रचना 'यात्रा' तथा पुष्प लता गणेश की रचना 'भिखारी' अत्यन्त सराहनीय एवं उत्कृष्ट हैं । पत्रिका का संपादन एवं रचनाओं की रचनात्मक सोच राजभाषा के प्रति आपके समर्पण भाव को दर्शाती है । निश्चित रूप से आपकी पत्रिका हिन्दी की विकास यात्रा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

वरि लेखा अधिकारी/हिन्दी कक्ष,
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) द्वितीय,
मध्य प्रदेश, ग्वालियर ।

पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं सुपाठय, उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक एवं संग्रहणीय हैं । विशेषकर श्री सुधीर शर्मा (चिकित्सक का जन्म), श्री कुमार शर्मा 'अनिल' (हरामी), श्री राजेश पंकज (पुनर्मिलन), श्रीमती मनजीत शर्मा 'मीरा' (गुल्लू की गुल्लक), श्री सुरेंद्र कुमार (कौन सा बटन दबाऊँ), श्री के के नंदा 'अश्क' (गज़ल), श्री रवींद्र सिंह (असम : एक अनोखा अनुभव) एवं श्री रविकान्त मीणा (स्वच्छ भारत अभियान) आदि रचनाएं अत्यन्त ही सराहनीय हैं । पत्रिका का आवरण पृष्ठ साथ ही राजभाषा से संबंधित कार्यालयीन गतिविधियों के छायाचित्र बहुत ही मनमोहक लगे । पत्रिका के उत्तम संपादन एवं संकलन हेतु संपादक मण्डल के सभी सदस्यों को साधुवाद ।

आनन्द कुमार पाण्डेय
सहायक लेखा अधिकारी / प्रशा
हिन्दी सेल एवं संपादक ''वन्दे मारतम''
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक), पश्चिम बंगाल,
कोलकाता ।

नवकिरण

अनुक्रमणिका

क्रम.	रचना	लेखक	पृष्ठ
1	संपादकीय	कुमार शर्मा 'अनिल'	01
2	इस साइबर मशीनी दुनिया में	डॉ. सुभाष रस्तोगी	02
3	एक दिन लड़की को	डॉ. सुभाष रस्तोगी	02
4	नदी एक परंपरा	कुमार शर्मा 'अनिल'	03
5	राहगीरो	माधव कौशिक	10
6	एकाकीपन	माधव कौशिक	10
7	दूसरी औरत	मनजीत शर्मा 'मीरा'	11
8	राष्ट्रभाषा हिन्दी	संजीव कुमार	14
9	ऐ बापू	सुभाष सिंगला	15
10	आदमी और जानवर	आलोक शर्मा	16
11	प्रार्थना	सुक्षिती नन्दा	17
12	वजूद	रविन्द्र सिंह	17
13	बादल	सुरेन्द्र कुमार	18
14	चोरी के फूल	सुरेन्द्र कुमार	18
15	रिसेप्शन पार्टी	राजेश 'पंकज'	19
16	पुलकित मन	कुलदीप कुमार मेहता	22
17	पच्चीस दोहे	विकास रोहिल्ला 'प्रीत'	23
18	कालू-एक व्यथा	आशीष कुमार	24
19	तार तार रिश्ते	चाँद सिंह दहिया	26
20	जीवन संगीत	संदीप भसीन	27
21	बेगाना	प्रमोद कुमार गुप्ता 'मन्टू'	28
22	राम-राम जी राम-राम	संदीप कुमार 'मान'	29

23	जिद्द	राही दरवेश	29
24	सुभाषिनी	नीतू सिंह	30
25	आखिर क्यों?	नरेन्द्र बड़गुजर	32
26	प्रिय/प्रभात	मोनिका कुमारी	33
27	क्या खिताब दे	गौरी	34
28	कितना अच्छा लगता है	पुष्पुलता गणेश	36
29	आज़ादी	विनीत कुमार	36
30	जीवन उल्लास से जीएं	राजेन्द्र शर्मा	37
31	कर्ज वाली लक्ष्मी	जोगिंदर सिंह	38
32	साँझ के दिये	बाल बिहारी प्रजापति	39
33	होली	मधु कंसल	39
34	राजभाषा हिन्दी का प्रगामी प्रयोग	नेक राम भाटिया	40
35	साँस्कृतिक एवं अन्य गतिविधियां	राजेन्द्र भसीन	41
36	प्रशासनिक शब्दावली	संजीव कुमार	42
37	सेवा निवृत्ति	रंजीव कुमार सिंह	43

सूचना

नवकिरण का आगामी अंक शीघ्र प्रकाशित किया जाना है। रचनाकार अपनी रचनाएं जैसे लेख, संस्मरण, विभागीय लेख, कहानी, कविता, गीत गजल इत्यादि हिन्दी कक्ष को भिजवा दें। रचनाएं पृष्ठ के एक तरफ टाईप की हुई अथवा हस्तलिखित मौलिकता प्रमाण पत्र सहित भेजें। डिजिटल रचनाओं का स्वागत किया जायेगा।

सम्पादकीय

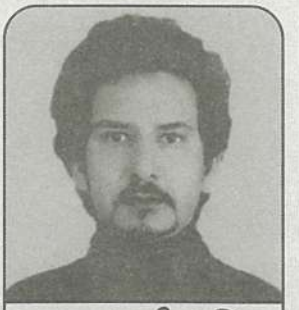

कुमार शर्मा अनिल

'नवकिरण' का 37वाँ अंक राजभाषा हिन्दी एवं आप सभी पाठकों को समर्पित है।

केन्द्र सरकार के कार्यालयों में विभागीय पत्रिकाओं के प्रकाशन का मुख्य उद्देश्य राजभाषा हिन्दी के प्रति कार्यालयों में सकारात्मक माहौल बनाने के साथ-साथ मौलिक रूप से राजभाषा हिन्दी में सरकारी काम काज करने के लिए प्रेरित करना है। 'नवकिरण' का प्रकाशन भी इसी अभियान का हिस्सा है। अब यह सर्वविदित है कि 'नवकिरण' ने इस कार्यालय में राजभाषा हिन्दी को सरकारी काम काज में प्रयुक्त होने वाली झिझक को ही नहीं तोड़ा बल्कि अंग्रेजी भाषा में काम करने वाले कार्मिकों को भी मौलिक हिन्दी में कार्य करने के लिए प्रेरित किया। यही वह पत्रिका है जिसने मात्र सरकारी कामकाज ही नहीं हिन्दी साहित्य में भी मौलिक लेखन को बढ़ावा देकर कार्मिकों की रचनात्मक प्रतिभा को भी मंच प्रदान किया। पत्रिका का वितरण अन्य कार्यालयों को भी किया जाता है जिससे कार्यालय की विभागीय गतिविधियों की जानकारी भी अन्य कार्यालयों तक पहुँचती है। पत्रिका से कई स्थापित लेखक भी जुडे हैं जो पत्रिका के साहित्यिक स्तर को बनाये रखते हैं।

मैं समझता हूँ कि जिस तरह से हमारे लिए राष्ट्रगान, राष्ट्रीय ध्वज सम्मान और राष्ट्रीय अस्मिता के प्रतीक हैं उसी तरह हमारी राष्ट्रभाषा हिन्दी भी हमारे लिए सम्मान और राष्ट्र प्रेम की प्रतीक होनी चाहिये। हमें नहीं भूलना चाहिये कि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हमारी पहचान हमारी भाषा से ही होती है।

अंत में मैं माननीय प्रधान महालेखाकार महोदय का विशेष आभार प्रकट करना चाहूँगा जिनके मार्गदर्शन में पत्रिका के इस अंक का प्रकाशन संभव हो पाया। साथ ही 'नवकिरण' परिवार से जुड़े सभी अधिकारियों का भी मैं आभार प्रकट करना चाहूँगा जिनकी बहुमूल्य सलाह समय-समय पर हमें मिलती रही। मैं अपने सहयोगी संपादकों, रचनाकारों का हृदय से धन्यवाद करता हूँ जिन्होंने पत्रिका के प्रकाशन में अथक सहयोग किया।

जय भारत, जय हिन्दी!

धन्यवाद

कुमार शर्मा अनिल

रचनाओं में व्यक्त विचार रचनाकारों के निजी विचार हैं
कार्यालय का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

-संपादक

डॉ. सुभाष रस्तोगी

इस साइबर मशीनी दुनिया में

इस साइबर मशीनी दुनिया में
ख़तों को संभाल कर रखना
क्योंकि ख़त बचेंगे
तो ही बचेगा मनुज-संतति का इतिहास
आँखों की शर्म बचेगी
अगर खत बचेंगे।
दुर्दिन में/काम आयेंगे
यही ख़त,
जो मनुष्यों को
रिश्तों की मर्यादा का ककहरा पढ़ायेंगे।
ख़त बचेंगे
तो बचेगी माँ की ममता
पिता का अनुशासन बचेगा।
संभाल कर-
रखना ख़तों को
क्योंकि यही ख़त
आड़े वक़्त में
फाह बन
जख़्म पर बिछेंगे
प्रेम-पत्रों को
ज़रूर सहेज कर रखना
क्योंकि प्रेम-पत्र बचेंगे
तो खनखनाती चूड़ियों की
ऋचाएँ बचेंगी ।
खत बचेंगे
तो ही बचेगा
नमक जीवन का।
ख़त बचेंगे
तो ही बचेगा
नमक जीवन का !

एक दिन लड़की को

एक दिन
लड़की को
क्या सूझी कि
उसने खेला
एक अजब-गज़ब खेल
खुद ही राजा
खुद ही रानी
अब चित्त भी लड़की की
और पट भी लड़की की
रानी जीते
या जीते राजा
जीतती तो
हर हाल में
लड़की ही
इस तरह-
लड़की बन गई
लीलाधर
पहली दफा उसने जाना
अपना भाग्यविधाता
स्वयं बनने का सुख
क्या होता है ?

नदी एक परंपरा

कुमार शर्मा अनिल

ऋतुराज वसंत के आमद की प्रतीक्षा में खेतों में खड़ी गेहूँ की फसल की सुनहरी बालियां ऐसे लग रही थीं जैसे किसी ने सैकड़ों एकड़ में सोना बिखेर दिया हो । सूरज का उजास अभी फैलना शुरू ही हुआ था । नदी के उथले जल में उभरी एक चटट्ान पर अपने दादा वीरभान के साथ बैठी निक्की नदी के जल में पैर लटकाए उन्हें मंत्रमुग्ध-सी देख रही थी । नदी के स्वच्छ निर्मल जल पर चमकती सूर्य रश्मियाँ ऐसा आभास दे रही थीं जैसे किसी ने नदी के ऊपर चांदी की वर्क चढ़ा दी हो ।

''इतने बरसों से यह नदी ऐसे ही शान्त बह रही है दादाजी.... इसमें कभी बाढ़ नहीं आती ?'' निक्की मंत्रमुग्ध थी। वीरभान हँस पड़े- ''सदियों से इस गाँव ने इसकी बाढ़ की मार कई बार झेली है । इसके बारे में प्रसिद्ध था कि हर बरसात में यह अपना रास्ता बदल देती थी । सैकड़ों एकड़ खेत बरबाद हो जाते । परन्तु यही नदी इस गांव की जीवन रेखा भी थी । सदियों इस नदी ने गाँव व खेतों की प्यास बुझाई है । पहले यह गाँव के बीचों-बीच से बहती थी । अब तो आधा कोस गाँव की आबादी से दूर हट गई है । आज जहाँ हमारी हवेली है उसके एकदम पास से बहती थी यह । आठ सौ साल पहले हमारे बुजुर्गो ने सबसे पहले इस नदी के किनारे अपने पशुधन के साथ इस गुहाड़ में अपनी कच्ची मिट्टी की झोंपड़ी डाली और बंजर जमीन को अपने पसीने से सींचा । ब्राह्मण, रांघड़, बनिया, डूम, वाल्मीकि, नाई, तेली, लुहार, कुम्हार, जुलाहा तो बाद में आए । जैसे-जैसे जाटों की अपनी आबादी और जरूरतें बढ़ी, उन्होंने दूसरी जाति और पेशे के लोगों को दोहली ज़मीन भेंट में देकर उन्हें गाँव में बसाया । तब गाँव ऐसे ही बसाए जाते थे । सब कुछ इस नदी ने देखा है । सदियों से इसे कुल माता की तरह पूजा जाता है । हमारी संस्कृति, विरासत, परंपराएं सब इस नदी ने सींची हैं । अब जैसे-जैसे आधुनिकता की दौड़ में परंपराएं टूटी है, नैतिक मूल्य घटे हैं, यह नदी भी सिमटकर एक पतली धारा में बदल गई है ।''

''परंपराएं टूटने से नदी का क्या सम्बन्ध है दादाजी ?'' - निक्की ने कौतूहल जताया ।

''परंपरा के अनुसार गाँव की सभी लड़कियों को गाँव की बेटी माना जाता इसलिए वे आपस में भाई-बहन होते। कहते हैं लगभग सत्तर बरस पहले गाँव की एक लड़की का गाँव के ही एक लड़के से प्रेम हो गया । बाद में दोनों ने इसी नदी में कूदकर आत्महत्या कर ली । बड़े-बूढ़े कहते हैं तभी से यह नदी गाँव छोड़कर जा रही है । पहले तो इसमें हाथी डूबा पानी हमेशा रहा करता । इसकी ही नमी से बारह महीने खेत की मिट्टी में नमी रहती । दस हाथ कुआँ खोदते तो पानी निकल आता। अब तो ....''- उन्होंने एक गहरी उसांस भरी - ''सब कुछ कितना बदल गया है अब । गाँव की बहन-बेटियों का कोई सम्मान नहीं रहा ।''

''आगे बढ़ने के लिए बदलना ही पड़ता है, दादाजी ..... और प्रेम हो जाना कोई गुनाह थोड़े ही है । मुझे तो बहुत अच्छा लगा यह गाँव । यहाँ के लोग, हरियाली, बाग-बगीचे, खेत और सबसे अच्छी यह शान्त बहती छोटी-सी धारा वाली नदी । इसका पानी देखो कितना साफ है.... तल पर पड़े हुए पत्थर भी कितने स्पष्ट दीखते हैं'' - निक्की चहक पड़ी .... ''हर साल अपना रास्ता बदलकर यह अपने-आप को स्वच्छ कर लेती होगी दादाजी ..... तभी इतनी साफ है ।''

''अपनी-अपनी सोच है । चल, अब घर चलते हैं बेटा ।'' वीरभान ने निक्की के कन्धे पर हाथ रख सहारा लेकर उठने की कोशिश की - ''तुझे अपने खेत भी दिखाता चलूं । अस्सी बरस की बूढ़ी टांगों ने अकड़कर वजन उठाने से इंकार कर दिया तो वे घुटने पकड़ फिर उसी चट्टान पर बैठ गए ।

''थोड़ी देर और बैठते हैं दादाजी, मुझे बहुत अच्छा लग रहा है ... फिर पता नहीं कभी गाँव आ सकूँ या नहीं।'' निक्की छोटे बच्चों की तरह मचल गई।

निक्की पहली बार गाँव आई है। अपने पूरे जीवन में उसने कभी कोई गाँव नहीं देखा। भारतीय गाँवों की जो छवि उसके मस्तिष्क में थी वह केवल हिन्दी फिल्मों को देखकर ही बनी थी। जिसमें चोली - लंहगा पहने सुन्दर लड़कियाँ लहलहाते खेतों में फसलों के बीच गीत गाती हुई नाचतीं, गाँव के तालाब या कुएँ में पनघट पर अपनी सहेलियों से चुहल करती और सुन्दर से नायक से स्वछन्द प्रेम। कई बार वह सोचती प्रेम की इतनी स्वछन्दता तो यहाँ मुम्बई में भी नहीं। अमेरिका में थी, परन्तु वहाँ प्रेम ही कहाँ होता है। सारे रिश्ते और सम्बन्ध स्वार्थ पर टिके होते हैं। पिछले छः बरस से वह मनोविज्ञान में 'डाक्ट्रेट' के लिए अमेरिका में थी। मनोविज्ञान के अतिरिक्त विभिन्न पुरातन संस्कृतियों और उनके इतिहास के बारे में भी उसकी रूचि थी। हर नई बात के बारे में जानने के लिए वह जिज्ञासु रहती। ''भिण्डी का पौधा होता है कि बेल ? कद्दू का वजन बेल कैसे संभाल पाती होगी ?'' निक्की जब छोटी थी तो दादाजी के मुम्बई आने पर ऐसे ढेरों प्रश्न पूछती। वीरभान हैं तो बस आठवीं पास, परन्तु उनके पास अनुभव का ऐसा खजाना है कि कई बार निक्की को भी आश्चर्यचकित रह जाना पड़ता।

''दादाजी, यहाँ की लड़कियाँ खुली धूप में इतनी मेहनत करती है तब भी इतनी सुंदर दिखती हैं''। - निक्की ने पुनः बात का सिरा पकड़ा।

''हमारे मन की सुंदरता और संस्कार ही चेहरे पर दीखते हैं। यहाँ की छोरियां भी ऐसी ही है। कहीं चले जाओ इंसान अपने संस्कार नहीं भूलता ..... भूलना भी नहीं चाहिए। अब देख, चन्द्रभान को इतने बरस हो गए गाँव छोड़े लेकिन अभी तक वह शहर की भागदौड़ का हिस्सा नहीं बन पाया। ऊपर से थोड़ा-बहुत बदला भी है परन्तु अन्दर से अभी भी वही ठेठ हरियाणवी। जब भी यहाँ गाँव आता है यहीं आंगन में खाट पर बैठकर रोटी खाता है। तू बचपन से ही बड़े-बड़े शहरों में पली-बढ़ी, अंग्रेजी स्कूलों में पढ़ी, अमेरिका में रही। हरियाणा की इस धरती की न तूने धूल फांकी, न यहाँ की नदी का जल पिया ..... इसीलिए तू यहाँ की नहीं लगती।''

''न्ना, मैं हरियाणा की छोरी ना सूं ?'' निक्की ने दादाजी के कंधे पर अपना चेहरा टिका दिया। हरियाणवी भाषा के कुछ शब्द पापा चन्द्रभान और मम्मी के बीच कभी-कभार हरियाणवी में होने वाले संवादों से चुराए थे। लेकिन उसके मुँह से यह चोरी के ही लगते। ''अरे, है तो तू हरियाणा की ही। अब अमेरिका जाकर अमेरिका की थोड़े ही हो जाएगी।'' दादाजी उसके सर पर प्यार से हाथ फिराते हैं। ''चल अब घर चलें, बहुत देर हो गई। रास्ते में खेतों से होकर चलेंगे।'' कहकर वे निक्की का सहारा लेकर उठ गए।

निक्की के पापा चन्द्रभान भारतीय प्रशासनिक सेवा में हैं और ज्यादातर समय वह प्रतिनियुक्ति पर मुम्बई या महाराष्ट्र के अन्य शहरों में ही रहे। कभी तबादला हुआ भी तो परिवार को उन्होंने निक्की को पढ़ाई के कारण मुम्बई ही रखा। दादाजी और दादी जी कभी-कभी मुम्बई आते रहते लेकिन निक्की कभी मुम्बई से इतनी दूर गाँव नहीं आ पाई जबकि अपने पैतृक गाँव आने, यहाँ के परिवेश और संस्कृति को जानने की जिज्ञासा उसके दिल में हमेशा पनपती रही। दादाजी जब भी मुम्बई आते उसे गाँव के ढेरों किस्से सुनाते। ये किस्से उसके मन में गाँव जाने की इच्छा और बलवती कर देते। बाद में कुछ ऐसा संयोग बना कि उसे छः वर्षो तक लगातार 'डाक्ट्रेट' के कारण अमेरिका में ही रहना पड़ा। इन्हीं वर्षो में दादी जी की मृत्यु हुई, दादाजी गाँव में अकेले पड़ गए और उनका मुम्बई आना भी कम हो गया। पहले निक्की थी तो उसकी वजह से ही वह मुम्बई में कुछ दिन ज्यादा रूक जाते थे। वरना वह शहर उन्हें काटने को दौड़ता। निक्की भी स्वयं को अपने पापा से अधिक दादा के ज्यादा करीब महसूस करती। पिछले माह ही वह अमेरिका से लौटी है और अगले माह ही उसे मुम्बई के एक नामी अस्पताल में ज्वाइन करना है। अमेरिका से लौटने पर पिछले हफ्ते ही उसकी दादाजी से फोन पर बात हुई थी - ''अब तेरा

दिल नहीं करता अपने दादा से मिलने को .... मैं आ सकता होता तो जरूर आ जाता । तुझे देखे एक अरसा हो गया । वक्त का कोई भरोसा नहीं है बेटा ..... अस्सी तो पूरे हो चुके ।'' उनकी आवाज लड़खड़ा गई ।

''मैं गाँव जाऊँगी ।'' फोन रखते ही निक्की ने अपना फैसला सुना दिया - ''मम्मी आप चलोगी मेरे साथ ?'' निक्की का गला रूंध गया ।

मम्मी और पापा के साथ गाँव जाने की योनाएं बनते - बिगड़ते जब पूरा हफ्ता निकल गया तो निक्की के सब्र का बाँध टूट गया - ''आप योजनाएं बनाते रहना - मैं तो जा रही हूँ'' ' निक्की ने अपना लगेज बांध लिया ।

मुम्बई से दिल्ली हवाई जहाज और फिर बस से यहाँ गाँव तक । गाँव के सड़क वाले स्टॉप से वीरभान उसे कार से घर तक ले आए । भिवानी से गोहाना जाने वाली सड़क से एक कोस अंदर बसा है यह गाँव । भारत के मानचित्र पर ढूंढो तो इस गाँव का अस्तित्व ढूंढे नहीं मिलता । सड़क किनारे लगती गाँव की सीमा ही लगभग चार कोस तक खिंच गई है लेकिन यहाँ ज्यादातर खेती की भूमि ही है । आबादी तो काफी अंदर है । सारे मकान पक्के हैं और ज्यादातर लोग खाते - पीते हैं ।

धूप थोड़ी तेज होने लगी थी । नदी के चिकने पत्थरों पर चलते हुए वे खेतों की सीमा तक आ गए ।

''किसी जमाने में यह गाँवपूरी एक बावनी यानि बावन हजार बीघा का स्वामी था । तब यह भिवानी गोहाना वाली मुख्य सड़क भी नहीं बनी थी ।'' रास्ते में दादाजी ने बताया - ''तब की बात ही कुछ और थी । आस - पास के तीन गाँवों में बहुत मान था इस गाँव का । गाँव में सभी के आंगन - बगड़ साझे थे । खेत - खलिहानों के तमाम काम मिल - जुलकर होते । रात गाँव के बड़े - बूढ़ों की चौपाल जमती । देश, धर्म, समाज के तमाम मसलों पर बात होती । कई बार नामी सांगी गाँव में बुलाए जाते । मुझे अभी तक याद है एक भगत जी हुआ करते थे । धोती - कुर्त्ते के ऊपर बंडी पहनते, खड़ताल रखते और खड़ाऊँ पहनकर चलते । चौपाल पर अकसर वे अपनी लिखी कविताओं, भजनों व रागनियों को उमाह में भरकर गाया करते । बड़ी ही सुरीली आवाज थी उनकी । सारे अच्छा खाते, अच्छा पहनते और अच्छा सोचते । इनमें भी सबसे ज्यादा मान - सम्मान पिताजी का था । तब अस्सी एकड़ माल्हाली की सबसे ज्यादा भूमि थी हमारे परिवार के पास । इसके अलावा भी भूड़बरानी की भूमि थी । चन्द्रभान के जन्म पर पिता जी ने कई एकड़ जमीन यजमानी के तौर पर मातूराम ब्राह्मण को दे दी थी। इसे दोहली जमीन कहते हैं। आज मातूराम के परिवार के लोग इसी पर खेती करते हैं'' - अतीत में विचरते दादाजी के झुर्रियों भरे चेहरे पर अचानक ही एक स्निग्धता उभर आई ।

''दादाजी, अब भी तो लोग कितने खुश हैं यहाँ पर । पहले से सुविधाएं भी बढ़ी हैं। हर घर में टेलीविजन है, फ्रिज है, फोन है। ज्यादा से ज्यादा बच्चे शिक्षित हो रहे हैं। मुझे तो लगता है लोग पहले से ज्यादा खुश होंगे'' निक्की बोली ।

''इस विकास की कीमत भी तो बहुत बड़ी चुकाई है गाँव ने । चरित्र और नैतिक मूल्य बहुत गिर गए है । पहले गाँव की हर लड़की गाँव की बेटी और बहन थी और अब ..... ?'' चलते - चलते वे खेतों तक आ गए ।

''कैसा है रे सत्तू ?'' दादाजी ने खेतों से उनकी ओर आते सतपाल से पूछा । सतपाल उनके खेतों की देखभाल किया करता था । 'कुछ मत पूछो चाचा । कल रात से राजेन्द्र गायब है । पता लगा है कन्हैया की बेटी पूजा भी घर से गायब है । कहीं दोनों साथ - साथ ही ना भाग गए हों ?'' सतपाल की आँखों में गहरी चिंता उतर आई । ''अगर यह सच है तो बहुत बुरा हुआ है सत्तू । गाँव की नाक कट जाएगी ।'' दादाजी भी चिंतित हो उठे । किसी भी तरह उन्हें ढूंढो... अभी तो बात दब जाएगी ।''

''कहाँ दबेगी बात चाचा । सारे गाँव को पता चल गया है । कन्हैया और उसके लड़के चारों ओर ढूंढने में लगे हैं । कहते हैं अगर मिल गए तो दोनों की लाश ही गाँव लेकर आएंगे।''

''ठीक ही है सत्तू । ऐसे चरित्रहीनों को तो मार ही देना चाहिए । यही हमारी परंपरा है । अब यदि सबको पता चल ही गया है तो शाम ही पंचायत कर उन्हें सजा सुनाई जाए । तेरा तो लड़का है .... कन्हैया की तो बेटी है । वह तो जीवन भर कहीं मुंह दिखाने लायक नहीं रहा ।'' वीरभान ने सत्तू को समझाया ।

'' आप पंच परमेश्वर हो, जो फैसला सुनाओ सिर माथे पर है'' - सत्तू ने हाथ जोड़ दिए - 'कुपुत्र हो तो मरा ही भला ।''

निक्की दादाजी का हाथ पकड़ उनहें सहारा देती हुई चल रही थी । निक्की को लगा जैसे दादाजी किसी गहरी चिंता में मग्न हो गए हों ।

''दादाजी, क्या उन्हें इसलिए सजा दी जाएगी कि वे आपस में प्रेम करते हैं'' - निक्की ने चिंता जताई ।

''जो भगवान चाहेगा वही होगा बेटा .... चल घर चलें'' - उन्होंने गहरी सांस भरी - ''अपनी सारी परंपराएं भूलते जा रहे हैं ये बच्चे ।''

वीरभान का आसपास के तीस गाँवों में बड़ा मान है । कुछ उनकी सम्पन्नता के कारण, कुछ इस वजह से कि उनका बेटा एक आई.ए.एस अधिकारी है । सांझी सुरक्षा और सामाजिक मसलों के निदान के लिए तीस गाँवों का संगठन है और उनकी एक सांझी महापंचायत है । गाँव के तमात झगड़ों का निपटारा गाँव की पंचायत या फिर तीस गाँवों की महापंचायत में ही होता जो थाने-कचहरियों से ज्यादा महत्त्व रखती है । इन फैसलों को सभी पक्षों को मानना पड़ता । पुलिस भी इसमें कोई दखल-अंदाजी नहीं करती । वीरभान ही इसके मुख्य पंच हैं । सारे गाँव में यह कहावत प्रसिद्ध है कि वीरभान जैसा पंचायती नहीं हुआ..... निरा दूध का दूध और पानी का पानी कर देवें सैं । जो लफ्ज मुँह ते काढ़ दिया गाँव नै मौड़या नहीं । वीरभान के बारे में यह भी मशहूर था कि किसी भी प्रकार की अनैतिकता पर वे कड़े कड़े निर्णय लेते।

शाम को ही चौपाल पर पंचायत बैठी । लड़के-लड़की का अभी एक कुछ पता नहीं था । वीरभान पिछले कई वर्षो से मुख्य सरपंच थे । पंचायत के सामने ही एक-दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप लगाते हुए दोनों पक्षों के लोग लड़ पड़े। कन्हैया और उसके लड़कों का मत था कि सतपाल का लड़का ही पूजा को बहला-फुसलाकर ले गया है । वह अपनी मर्जी से नहीं गई । जबकि सतपाल के परिवार वाले इससे सहमत नहीं थे । उनका मत था कि दोनों आपसी रजामंदी से ही घर से भागे हैं । ''अगर दोनों रजामंदी से भागे हैं तो इतना पक्का है सतपाल कि जब भी वे पकड़े जाएंगे, यहीं चौपाल पर दोनों को हम खुद मार देंगे।'' कन्हैया चीखा ।

''पहले दोनों के बारे में पता तो चले । दोनों साथ भी हैं या नहीं । कहीं दोनों के साथ कोई और अनहोनी हुई हो और तुम उनके प्रेम सम्बन्ध की कहानी लेकर बैठ गए । किसी ने साथ जाते भी देखा है उन्हें ?'' वीरभान ने दोनों पक्षों को समझाते हुए पंचायत बर्खास्त कर दी - ''पहले अपराधी पकड़े जाएं, उसके बाद सजा का निर्णय होगा ।''

''क्या हुआ दादाजी ?'' घर लौटते ही निक्की ने पूछा तो उन्होंने सारा किस्सा बयान कर दिया ।

''तो क्या उन्हें जान से मार देंगे ? ऐसा क्या अपराध किया है उन्होंने ? प्यार ही तो किया है ..... विवाह भी कर लेंगे । क्या प्यार करना और अपनी मर्जी से विवाह करना अपराध है ?'' निक्की इस अमानवीयता से सख्त खिलाफ थी ।

''वो गाँव के बेटे-बेटी हैं । इस रिश्ते से भाई-बहन हुए । दोनों का जातियां भी अलग हैं । फिर कैसे हो सकती है उनकी शादी ?'' वीरभान बोले - ''अगर यही परंपरा चल पड़ी तो नैतिक पतन हो जाएगा गाँव भर का । यह हमारी परंपरा नहीं है ।''

''लेकिन है तो यह गलत । आप प्रेम और नैतिक पतन को एक दूसरे से जोड़कर क्यों देख रहे है । वे आपस में प्रेम करते

हैं, शादी करना चाहते हैं, तो यह अपराध कैसे हो गया दादाजी ? और इतना बड़ा अपराध कि उनकी सार्वजनिक हत्या कर दी जाए।''

''बहुत बड़ा अपराध ही है यह बेटा ..... यही इस गाँव की परंपरा है और यह परंपरा सदियों से चलती आ रही है। तू नहीं समझेगी।'' वे निक्की को समझाते बोले।

''यह कैसी परंपरा है दादाजी, जिसमें प्रेम करना अपराध हो और मासूमों की हत्या करना अपराध ना हो। अगर ये परंपराएं तोड़ी नहीं गई तो बहुत बड़ा अनर्थ हो जाएगा, दादजी। दो मासूमों की हत्या कर दी जाएगी और यह निर्णय आप देंगे... आप ?''

''अब सरपंच मैं हूँ तो निर्णय भी मुझे ही देना होगा। कोई और थोड़े ही देगा। चल, अब तू सोने की तैयारी कर'' - उन्होंने बात टाली।

''दादाजी, एक प्रश्न पूछूं मैं। मैं भी इसी गाँव की बेटी हूँ। अगर ऐसा मैं करती तब भी आपका फैसला यही होता ?'' निक्की बहस पर उतर आई - ''मैं किसी अनैतिकता का समर्थन नहीं कर रही, प्रेम की बात कर रही हूँ।''

''शायद.... ।'' - एक पल के लिए वीरभान की जबान लड़खड़ा गई - ''हाँ, बिल्कुल यही फैसला होता। परंपराएं तोड़ी नहीं जाती।'' वीरभान उठ गए।

निक्की चीख उठी - ''गलत कहते हैं आप। इतिहास इस बात का गवाह है कि हर परंपरा अपना सामाजिक दायित्व पूरा करने के लिए अपनी मौत आप मर जाती है। जाति, धर्म, वर्ण इस समाज को नियमानुसार चलाए जाने के लिए बनाए गए है। पुराने जमाने में जो नैतिक आदर्श, मर्यादाएं और परंपराएं बनाई गई थीं, उनके पीछे कुछ सामाजिक कारण थे .... सामाजिक आधार थे... या फिर कुछ लोगों के जातिगत और सामाजिक स्वार्थ थे। अब जब समाज उस रूप में रहा ही नहीं तो उन परंपराओं को पकड़कर क्यों बैठे हैं आप ?''

सुबह होते ही निक्की ने अपना सामान बांध लिया। ''मैं जा रही हूँ वापिस .... मुझे नहीं रूकना है ऐसे गाँव में जहाँ प्रेम, इंसानियत और मानवता का खून होता हो। मैं नहीं देख सकती यह कि मेरे दादाजी ऐसा फैसला दें जिसमें दो प्रेम करने वालों को भरी पंचायत में नृशंसता से मार दिया जाए। ... आपने तो दादाजी, निक्की को भी जीते जी मार दिया। बड़ा मान था मुझे आप पर।''

''तू अपने को इस झगड़े में क्यों डाल रही है ? क्या जानती है तू यहां की परंपराओं के बारे में ? खुद माँ-बाप ऐसे बच्चों को यहाँ जान से मार डालते हें... खुद अपने हाथों से। पंचायत तो फैसला बाद में देती है, माँ-बाप यह फैसला अपने मन में पहले ही कर चुके होते हैं। मैं क्या बदलूँगा इन परंपराओं को और क्या तू। बरसों से ऐसा ही चला आ रहा है .... और आगे भी चलता रहेगा।''

''बरसों से अगर कुछ गलत चला आ रहा है तो उसे बदलेगा कौन ? हम ही ना। पूरा गाँव आपका सम्मान करता है। अगर आप उन दोनों प्रेम करने वालों की शादी की इजाजत देते हैं तो कौन उस फैसला के खिलाफ़ जाएगा। ..... दादाजी, इतने बरसों में तो आपके गाँव की नदी तक ने कितनी बार अपना रास्ता बदल लिया .... सहजता से बहने के लिए। ..... और आप सभी अभी तक उन सड़ी-गली परंपराओं और मान्यताओं के नाले में तिनकों की तरह बहते चले जा रहे हैं। जाकर पूछिए उस नदी से कि सत्तर साल पहले जब उस प्रेमी जोड़े ने गाँव की इस नृशंस परंपरा से भयभीत होकर नदी में डूबकर आत्महत्या की थी तो क्यों यह नदी गाँव से दूर हटने लगी .... सूखने लगी। लेकिन आप लोगों ने उसके भी अपने वहीं अर्थ निकाले जो आपकी इस झूठी मान्यता का पोषण करें। सत्तर बरस पहले भी पाप उस प्रेमी जोड़े ने नहीं किया था दादाजी, पाप किया था इस पूरे गाँव ने

जिसने जीते जी उन्हें साथ नहीं रहने दिया । .... इस नदी को 'माँ' की तरह पूजते हैं न आप और गाँव वाले ? उस उस प्रेमी जोड़े को तब इसी 'माँ' ने अपने आंचल में समेटा था और नाराज होकर इस गाँव से किनारा कर लिया।''

''तू समझेगी नहीं और मैं तुझे समझा नहीं पाऊँगा निक्की । बस इतना ही कहूँगा कि जितने दिन के लिए आई थी, उतने दिन रूक जा । आगे तेरी मर्जी ।''

''नहीं दादाजी, मैं यह सब नहीं देख सकूंगी ।'' - निक्की का गला रूंध गया - ''मैं वापिस जाऊँगी.... अभी।''

निक्की की जिद को वह जानते थे । उन्होंने ड्राइवर को आवाज दी ..... ''हरपाल, गाड़ी निकाल ले । निक्की को बस में बिठाकर आना है ।''

''चौधरी साहब, सारे गाँव में माहौल खराब हो रहा है । कभी भी खून-खराबा हो सकता है । दोनों जातियों के लोग लामबंद हो गए हैं । आपका गाँव में ही रहना बहुत जरूरी है ।'' ड्राइवर ने चिंता व्यक्त की ।

''तू गाड़ी निकाल ... दो घंटे में वापिस आ जाएंगे । इसे भी बिसूरते नहीं देख सकता मैं ।''

गाँव से निकलते ही उनहें पता लगा गया कि माहौल कितना खराब हो चुका है । आसपास के तीस गाँवों से दोनों जातियों के लोग एक-दूसरे पर दोषारोपण करते हुए ट्रैक्टरों में भरकर गाँव पहुँचने लगे थे । कुछ युवक मुख्य सड़क पर आने-जाने वाले सभी वाहनों को रोककर उन प्रेमियों की तलाश कर रहे थे । निक्की हतप्रभ-सी यह नजारा देख रही थी । कुछ आगे जाने पर अचानक ड्राइवर ने ब्रेक लगाते हुए कार रोक दी - ''चौधरी साहब, सतपाल का छोरा और कन्हैया की छोरी ।''

निक्की ने कार की खिड़की से पीछे पलटकर देखा । बाइस-तेइस बरस के एक लड़के के साथ उन्नीस-बीस बरस की एक लड़की शादी के लाल जोड़े में थी । कार के रूकने से भयभीत हो वे उलटी दिशा में जाने लगे ।

''कार मोड़ ले हरपाल .... और पकड़ उन्हें ।'' वीरभान ने आदेश दिया ।

थोड़ी ही देर में हरपाल उन दोनों को पकड़कर ले आया । वीरभान को देखते ही उन्हें साँप सूँघ गया ।

''कहाँ जा रहे थे तुम इस तरह भागकर.... ?'' उन्होंने डांटते हुए पूछा ।

दोनों के मुँह से एक शब्द भी नहीं निकला ।

निक्की ने जल्दी से कार का पिछला दरवाजा खोला - ''चलो बैठो कार में.... पता है तुम्हारी जान को कितना खतरा है। हम तुम्हें बस स्टैंड तक छोड़ देंगे । फिर वहाँ से तुम्हें जहाँ जाना हो वहाँ चले जाना ।''

''हरपाल, गाड़ी गाँव की ओर लौटा ले ।'' उनके बैठते ही वीरभान ने सख्त स्वर में आदेश दिया ।

''दादाजी, ये क्या कर रहे हैं आप .... गाँव में लोग इनके खून के प्यासे बैठे हैं ..... मार डालेंगे इन्हें । ..... और अगर आपने यही करना है तो मुझे यहीं उतार दीजिए ।'' निक्की चीख पड़ी ।

''हरपाल, हवेली पहुँचने तक गाड़ी नहीं रोकना ।'' वीरभान ने निक्की की बात को अनसुना कर हरपाल को आदेश दिया ।

लड़का-लड़की इतने भयभीत थे कि उनकी हालत देख निक्की खुद भी कांपने लगी।

गाँव पहुंचते ही उन्होंने लड़का-लड़की को एक कमरे में बंद कर बाहर से ताला लगवा दिया । साथ ही सारे गाँव को सूचित कर दिया कि लड़की-लड़का मिल गए हैं । आज शाम ही पंचायत होगी । लड़का-लड़की जितने डरे हुए थे निक्की भी उतनी ही आशंकित थी । वे नौकर को हिदायत देकर हवेली से बाहर निकल गए । काफी देर तक वे दोनों पक्षों को सुनते-समझाते रहे ताकि आपस में कोई हिंसा ना हो ।

शाम को चौपाल पर पंचायत बैठी । आसपास के गाँवों के भी हजारों लोग थे । लड़का – लड़की को मुजरिमों की तरह पूरी सुरक्षा में वहाँ लाया गया । पंचों में आपसी विचार – विमर्श हुआ और हमेशा की तरह अपनी – अपनी राय देकर अंतिम निर्णय वीरभान पर छोड़ दिया । सभी जानते थे कि वीरभान बहुत ही उच्च नैतिक आदर्शों के हिमायती थे । उनके द्वारा सुनाए जाने वाले कड़े निर्णय का सभी को अनुमान था । कन्हैया और उसके लड़के उत्तेजित थे और उनकी मांग थी कि निर्णय होते ही यहीं सार्वजनिक रूप में दोनों को मौत दे दी जाए ताकि भविष्य में यह कहानी दोहराई ना जाए । बाद में यदि पुलिस कचहरी का चक्कर चला भी तो वे जेल जाने को भी तैयार थे । सतपाल अपने बेटे के कृत्य पर शर्मिंदा तो था परन्तु उसकी मौत की आशंका से भयभीत भी था । वीरभान ने जब सभी को शान्त होने का इशारा किया तो पूरी चौपाल पर सन्नाटा छा गया । सभी दम साधे उनके फैसले की प्रतीक्षा करने लगे ।

वीरभान ने बोलना शुरू किया .... ''भाईयों, गाँव के सारे मसले आज तक पंचायत में ही सुलझाए गए हैं, कभी कोर्ट कचहरी की जरूरत नहीं पड़ी । पंचायत में जो भी फैसले हुए हैं उसे किसी ने मोड़ा नहीं है । मेरी उम्मीद है आज भी पंचायत ने जो फैसला लिया है उसे भी कोई नहीं मोड़ेगा..... सतपाल और कन्हैया भी और उनकी सारी जात – बिरादरी भी ।''

''हाँ, हमें मंजूर है ..... ।'' चारों ओर से आवाज़ें आई ।

''यह सच्चाई है कि आज तक गाँव के किसी छोरे ने अपने ही गाँव की छोरी से शादी करने की बात मन में नहीं लाई । तो इन छोरा – छोरी ने अपराध तो किया ही है पर ये अपराध कितना बड़ा है और इसकी सजा कितनी बड़ी होनी चाहिए इसी पर मेरा फैसला है । पंचायत ने फैसला किया है कि इन छोरा – छोरी को गाँव से बाहर काढ़ दिया जाए और जहाँ भी ये जाना चाहें इन्हें जाने दिया जाए । इनकी यही सजा है कि ये अब इस गाँव में नहीं रह सकते । इनकी जान लेने का हक हम में से किसी को नहीं है । इनके माँ – बाप को भी नहीं।..... इन्होंने इस गाँव की संस्कृति, परंपरा और विरासत से हटकर अपनी अलग परंपरा डाली है .... वह अच्छी है या बुरी, उसके परिणाम ये दोनों ही भुगतेंगे ... बस, मेरा यही फैसला है ।

पंचायत बर्खास्त होने के पश्चात जब भीड़ तितर – बितर हुई तो हरपाल ने उन्हें सहारा देकर उठाया – ''चौधरी साब, चलो, घर चलें ।''

''तू घर चल .... निक्की को बता देना मेरा फैसला । मैं थोड़ा देर से आऊँगा । मन बड़ा उदास है .... थोड़ी देर नदी के किनारे जाकर बैठूंगा । उसी से पूछूंगा मैंने ठीक किया या गलत ।'' धीरे – धीरे वे नदी की ओर ऐसे चल दिए जैसे अब वह उनसे कुछ कदम की दूरी पर ही बहने लगेगी ।

.....

हिन्दी पढ़ो	हिन्दी पढ़ो	हिन्दी पढ़ो
हिन्दी लिखो	हिन्दी लिखो	हिन्दी लिखो
हिन्दी बोलो	हिन्दी बोलो	हिन्दी बोलो
हिन्दी पढ़ो	हिन्दी पढ़ो	हिन्दी पढ़ो
हिन्दी लिखो	हिन्दी लिखो	हिन्दी लिखो
हिन्दी बोलो	हिन्दी बोलो	हिन्दी बोलो

माधव कौशिक

चेयरमैन, चण्डीगढ़ साहित्य अकादमी

राहगीरो

न ढलेगा
रात भी होगी
म आयेगी
र सुबह लेकर
ा तरह ज़िन्दगी नहीं रूकती
ही बहती है
क दरिया सी
मने सीने में
रे दर्द लिए
मने सीने में ढ़ेर सारी उम्मीद
मनी आंखों में
ाने कुछ कल के
न्दगी नूर बन गई जल के।
गीरो! पड़ाव को मंज़िल
न लेना भी भूल होती है
गीरों के सर पर चन्दन सी
ते भर की धूल होती है
ा भर जो चलेगा
मन में
के दहकते अंगार लिये
स्त देखेगा रास्ता उस का
थ में खुशबुओं के हार लिए ।

एकाकीपन

जब रातों को
नींद नहीं आती है तब
बिस्तर भी
कांटों सा चुभता
अपना बदन
बोझ से भारी कंबल जैसा
सांसों की आवाज़ें बोझल
पलकों पर परछाइयां चलती
दीवारों पर
साये हिलते हैं यादों के
दूर गली से
आवाज़ें आती कुत्तों की
चौकीदारों की खटखट से
चौखट जागी
पिछवाड़े से कोई बिल्ली
दुम दबा कर ऐसे भागी
जैसे नींद
मेरी आंखों के
गलियारे से हिरण हो गई
रात अंधेरी गुफा सरीखी
दिन से
कई गुणा ज्यादा
लम्बी लगती है ।

दूसरी औरत

मनजीत शर्मा 'मीरा'

''मैं अपनी बीवी से बहुत प्यार करता हूँ।'' उदास सी आवाज में कहकर माइकल ने सिर झुका लिया।

''इसमें परेशानी वाली क्या बात हैं ? मैं समझ सकता हूँ कि तुम सच बोल रहे हो ... ।''

''पर उसे मेरी बात पर यकीन नहीं आता .... ।''

''यकीन नहीं आता .... क्या मतलब ? मेरे ख्याल में तुम एक अच्छे, सभ्य और शालीन युवक हो। तुम्हारी बीवी को तुम पर विश्वास करना चाहिए। मैंने अक्सर तुम्हें उसके लिए उपहार लाते देखा है, बाजार में शॉपिंग करते देखा है और पिछली बार तो तुमने उसके जन्मदिन पर एक बड़े होटल में शानदार पार्टी भी दी थी। तुम हमेशा उसके प्रति उदार रहे हो, मेरे दोस्त।''

''हाँ, मैं रोज़ी के प्रति हमेशा बहुत उदार रहा हूँ। जो वह कहती है, मानता हूँ। फिर भी वह सीधे मुँह मुझसे बात नहीं करती। उसे समझना बहुत मुश्किल है।''

''तुम ठीक कहते हो। इन औरतों को समझना वाकई बहुत मुश्किल होता है। कभी बिल्कुल अपनी लगती हैं और कभी एकदम अजनबी बन जाती है। अब मेरी पत्नी को ही देखो .... दो साल कितना बहकाया उसने मुझे। बार-बार रूठकर अपने फादर के घर चलती जाती थी।'' कहकर सैम ने हाथ में पकड़ा गिलास मेज पर रख दिया और कुर्सी पर कुछ ज्यादा ही पसर गया।''

''मन छोटा मत करो, दोस्त ! लो, पहले ये भुने हुए काजू खाओ। मेरे ख्याल में तुम्हारी वाइफ वाकई अच्छी है। कितना ख्याल रखती है तुम्हारा। जान देती है तुम पर .... पर मेरी ने तो जीना हराम कर रखा है।''

''माइकल, मैं तुम्हें बहुत करीब से तो नहीं जानता। बस, पिछले दो साल की दोस्ती है हमारी। पहली बार हम क्रिसमस ईव पर चर्च में मिले थे। और आज शायद छठी या सातवीं बार इस बीयर बार में मिल रहे हैं। पर मैं दावे से कह सकता हूँ कि तुम मुझसे कुछ छिपा रहे हो।'' सैम ने प्लेट से कुछ चीज़ फिंगर उठाए और गिलास से वाइन का एक सिप लेते हुए माइकल के चेहरे पर नजरें गड़ा दीं।

''दरअसल .... !''

''दरअसल क्या ? बताओ ..... दोस्त से कैसा पर्दा ?''

''दरअसल वह उस दूसरी औरत को बर्दाश्त नहीं कर पा रही।''

सैम के हाथ से गिलास फिसलते-फिसलते बचा। उसने माइकल का कंधा थाम लिया- ''क्या कह रहे हो तुम ... ? दूसरी औरत ? ..... और वो भी तुम्हारी जिन्दगी में ? मजाक तो नहीं कर रहे, यार ? कहीं दिमाग तो नहीं फिर गया तुम्हारा ? तुम ऐसा कैसे कर सकते हो ? तुमने तो अपनी वाइफ से लव मैरिज की थी।''

''की थी .... जरूर की थी मैंने रोज़ी से लव मैरिज। .... पर मैं उसे भी बहुत प्यार करता हूँ।''

''मुझे बहुत हैरानी हो रही है । मैंने तुम्हें इस तरह का आदमी नहीं समझा था । मैं तो हमेशा यही समझता था कि तुम अपनी फैमिली से बेहद प्यार करते हो । एक सीधे-सादे और घरेलू आदमी हो तुम । मुझे अब भी यकीन नहीं आ रहा । लगता है तुम्हें कुछ ज्यादा ही चढ़ गई है । अब अगला पेग बिल्कुल मत लेना । लाओ अपना गिलास मुझे दो ।''

''ठीक है, जैसा तुम सोचना चाहो सोच सकते हो । किसी को समझने के लिए कुछ पल का साथ भी बहुत होता है । मैंने कहा था ना मेरी बीवी मेरी बात पर अब विश्वास नहीं करती । तुम भी नहीं करोगे तो कोई तूफान नहीं आ जाएगा । लाओ, ये बोतल मुझे दे दो । बस एक आखरी पेग और लेना चाहता हूँ । बुरा मत मानना, दोस्त, पूरी तरह रिलेक्स होना चाहता हूँ ।''

''ठीक है ! पर आज तुमने कुछ ज्यादा ही चढ़ा ली ।''

''आगे सुनो, दोस्त । तुम सुन रहे हो ना .... ?''

''हाँ, मैं सुन रहा हूँ .... होश तो तुम खो रहे हो ।''

''दरअसल उस दिन क्रिसमस पर मैं उससे मिलने चला गया था तो मेरी वाइफ रोज़ी ने घर के बर्तन पटक दिए । इस दिन बाद उसका फोन आया कि वह बीमार है । मैं डाक्टर को लेकर उसके घर गया । मेरे गले से लगकर वह देर तक रोती रही । इस पर भी रोज़ी ने बवाल खड़ा कर दिया ।''

''तुम्हारी वाइफ को यह सब बताता कौन है ? क्या वह तुम्हारी चौकीदारी करती है?''

''हाँ, कई बार करती भी है । लेकिन मैं भी सारी बातें उसे सच-सच बता देता हूँ । कुछ नहीं छिपाता उससे ।''

''बड़ी हिम्मत की बात हैं! एक बात सच-सच बताना । पहले अपना चेहरा ठीक करो। हाँ, ऐसे । अब मेरी आँखों में देखो । यूं व्यंग्य से मत हँसो, दोस्त, सच-सच बताओ । तुम्हें जीसस की कसम है । क्या वह बहुत सुन्दर है ?''

''हाँ, बहुत सुन्दर ।''

''तुम्हारी वाइफ से भी ज्यादा ?''

''हाँ, रोज़ी से भी ज्यादा ।''

''तुम्हें वो आखरी पेग नहीं लेना चाहिए था । मुझे लगता है नशे के कारण तुम बहक रहे हो । याद करो, पिछली बार तुमने मुझे बताया था कि तुम्हारी वाइफ दुनिया की सबसे सुन्दर औरत है ।''

''हाँ, कहा था । .... पर वह उससे ज्यादा सुन्दर नहीं है ।''

''लगता है तुम उस औरत से कुछ ज्यादा ही प्रभावित हो । तुम किसी दबाव में तो नहीं हो ना दोस्त ? क्या वह बहुत पैसे वाली है ?''

''नहीं, वह गरीब है और मुझे ही अपनी दौलत समझती है ।''

''क्या वह तुम्हारी जिन्दगी में तुम्हारी शादी के बाद आई है ?''

''नहीं।''

''फिर तुम्हारा दिमाग वाकई फिर गया है। यदि तुम्हें उससे इतना ही प्रेम था तो तुम्हें रोज़ी से शादी नहीं करनी चाहिए थी।''

''हाँ, कल की घटना से मुझे ऐसा ही महसूस हो रहा है।''

''कल क्या गुल खिला आए तुम ? लगता है तुम साइकी हो गए हो। अपनी बीवी को तंग करने में तुम्हें मजा आने लगा है।''

''मुझे कोई मजा नहीं आता। मैंने कहा ना मैं अपनी बीवी से बहुत प्यार करता हूँ।''

''बहुत प्यार करता हूँ। झूठ बोलते हो तुम .... ।''

''नहीं, मैं सच कह रहा हूँ। बाइ गॉड .... ।''

''फिर कल क्या हुआ था .... ?''

''कल मेरा जन्मदिन था .... ।''

''ओह ! हैप्पी बर्थडे टू यू .... ।''

''थैंक्यू .... । हाँ, तो कल मेरा जन्मदिन था। और मैंने अपना बर्थडे उसी के घर पर, उसकी साथ मनाया।''

''व्हाट नानसेंस ? रब्बिश ! बट व्हाय .... ?''

''क्योंकि रोज़ी नहीं चाहती थी कि मैं उसे पार्टी का निमंत्रण-पत्र भेजूं। उसे इनवाइट करुँ। रात को घर भी नहीं आया। वहीं रूका। इसीलिए तुफान मचा रखा है उसने।''

''बड़े अजीब आदमी हो तुम। दूसरी औरत का ख्याल रखते हो और अपनी बीवी का नहीं। रात को दूसरी औरत के घर पर रूकते हो और कहते हो कि मेरी बीवी ने तूफान मचा रखा है। तुम दो नावों में सवार हो, दोस्त। साफ शब्दों में कहूँ तो ढोंगी, मक्कार और धोखेबाज इंसान हो तुम। मुझे दुख है कि मैंने तुम्हारे जैसे चालबाज इंसान के साथ दोस्ती रखी .... ।'' कहते हुए सैम उठ खड़ा हुआ और अपना कोट पहनने लगा।

''बैठो सैम, कम से कम इस वक्त मुझे छोड़कर ना जाओ। मुझे तुम्हारी बेहद जरूरत है। तुम तो मुझे समझने की कोशिश करो।''

''खाक समझूं .... अगर मेरी दोस्ती चाहते हो तो खुद को बदलो, माइकल। सुधारो खुद को। गलत तुम हो, तुम्हारी वाइफ नहीं।''

माइकल की आँखें भर आई। रूंधे गले से बोला - ''वह भी यही कहती है कि मैं गलत हूँ लेकिन इससे मैं इस औरत को छोड़ तो नहीं सकता। आखिर उसने मुझे पाल-पोसकर इतना बड़ा किया है। माँ है वो मेरी ..... ।''

राष्ट्रभाषा हिन्दी

संजीव कुमार

राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूँगा है। अपनी मातृभाषा का सम्मान करना हमारा नैतिक कर्त्तव्य है। हिन्दी किसी पर न तो जबरदस्ती लादी जा रही है और न ही लादी जाएगी। लेकिन मन में इतना ठान लीजिए कि हिन्दी का विकास ही हमारा विकास है। शिक्षित लोगों का यह नैतिक कर्त्तव्य है कि वे ज्यादा से ज्यादा अपनी राष्ट्रभाषा का प्रचार व प्रसार करें। वे झूठी शान के लिए अंग्रेजी के पीछे न भागें। सरकारी कार्यालयों का यह संवैधानिक दायित्व है कि वे जितना ज्यादा संभव हो जनकल्याण की सूचनाएं/जानकारियां हिन्दी में ही जारी करें ताकि ज्याद से ज्यादा लोग इनका लाभ उठा सकें। हमारे मन में हिन्दी भाषा के प्रति ये भावना तो जरूर होनी चाहिए कि हिन्दी हमारी मातृभाषा है, मात्र एक भाषा नहीं है।

राष्ट्रभाषा हिन्दी को 14 सितम्बर 1949 को संविधान सभा ने एकमत से यह निर्णय लिया कि हिन्दी ही भारत की राजभाषा होगी। अनुच्छेद 343 के अंतर्गत देवनागरी लिपि में लिखित हिन्दी को 1950 में राष्ट्रभाषा का दर्जा दिया गया। भारत एक बहुभाषी राष्ट्र है, यहां 461 भाषाऐं बोली जाती हैं। फिर भी देश के 77% लोग हिन्दी बोलते और समझते हैं। भाषा जन-संपर्क का सबसे बड़ा माध्यम होती है। राष्ट्रभाषा हिन्दी ने देश की अलग-2 संस्कृतियों को आपस में जोड़ने में एक महत्वपूर्ण योगदान दिया है। वर्तमान समय सूचना-प्रौद्योगिकी का समय है। आज की पीढ़ी अपना ज्यादातर समय सूचना के यंत्रों पर बिताती है। सन् 2000 में हिन्दी का पहला वेब-पोर्टल अस्तित्व में आया था । तेजी से इंटरनेट पर हिन्दी ने अपनी छाप छोड़नी प्रारंभ कर दी और दिन प्रतिदिन यह रफ्तार पकड़ रही है। परिणाम स्वरूप देश में हर पांच में से एक व्यक्ति इन्टरनेट को हिन्दी में चलाना पसंद करता है।

यह हमारे लिए बड़े गर्व का विषय है कि इस समय संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के 45 विश्वविद्यालयों सहित पूरे संसार के लगभग 176 विश्वविद्यालयों में हिन्दी की पढ़ाई करवाई जा रही है। यह हमारे लिए बड़े गर्व का क्षण था जब पहली बार 1977 में भारत के पूर्व प्रधान मंत्री एवं तत्कालीन विदेश मंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने संयुक्त राष्ट्र की आम सभा को हिन्दी में संबोधित किया। हिन्दी को सबसे ज्यादा नुकसान पहुँचाने वाले हिन्दी अखबार ही हैं। उन्होंने अरबी, अंग्रेजी और फारसी भाषा के शब्दों को लोकप्रियता पाने के लिए जान-बूझकर अखबारों में ठूसकर उन्हें प्रचलन में ला दिया। दूसरा हमारी शिक्षा प्रणाली आज भी अंग्रेजी को सफलता की कुंजी की तरह प्रस्तुत करती है। आज का मध्यम वर्ग जो सबसे ज्यादा शिक्षित है अपने बच्चों को सिर्फ कॉन्वेंट स्कूलों में भेजना पसंद करता है। इन स्कूलों का मुख्य ध्येय सिर्फ अंग्रेजी में ही सोचना और बातचीत करना सिखाना है। इन्हें राष्ट्रभाषा हिन्दी से जुड़ी संस्कृति व संस्कारों से कोई लेना-देना नहीं है। यदि बच्चों का आधार ऐसे बनेगा तो वे राष्ट्रभाषा हिन्दी से कैसे जुड़ पायेंगे । यदि हम राष्ट्रभाषा हिन्दी की उन्नति चाहते हैं तो इसे हमें अपने संस्कारों में लाना होगा, तभी इसका प्रचार-प्रसार संभव है।

यह पत्रिका आप जैसे प्रबुद्ध पाठकों की अमानत है। आपकी प्रत्येक समालोचना, सुझाव हमारा पथ प्रदर्शित करता है।

-संपादक

सुभाष सिंगला

ऐ बापू

ऐ बापू!
तुम तो बहुत दूर-दर्शी थे
तुमने बहुत पहले देख लिया
कि भारत को आजादी
बिना शस्त्रों की लड़ाई के
कैसे मिल सकती है
और भारत को
अपने असूलों की लड़ाई से
आजाद करवा कर
तुमने
इसे सच कर दिखाया।
शायद तुझे पता था
कि सत्ता की कुर्सी मनुष्य में
ऐसे ऐसे परिवर्तन ला देती है
कि उसकी अपनी
मूल से मूल
सोच भी बदल जाती है
इसी लिए तुम सत्ता
की कुर्सी से दूर रहे
परन्तु
काश तुम भोले भाले
चेहरों के पीछे छुपे
दुश्मनों को देख पाते
जो तुम्हारी जान भी ले सकते थे।
पुराने चेहरे
जो आजादी की लड़ाई में
कंधे से कंधा मिलाकर
तुम्हारे साथ चल रहे थे
वही इतने बदल जाएंगे
कि अपनी सोच को भी
नये तरीके से पेश कर
तुम्हारी सोच बताएंगे
और इसी बल पर
लोगों को रिझांएगे

क्या आपके
राम राज की कल्पना
आज के राज जैसी थी
नहीं कदापि नहीं.....
हो नहीं सकता
काश तुम देख सकते
कि हमारा देश हमारे लोग
लोकतंत्र के लिए नहीं बने
लोकतंत्र होता है
पढे लिखों के लिए
जो सही मायनों में
दूसरों की भावनाओं का
और कानून का
सम्मान करना जानता हो
काश तुम देख पाते
यह देश तो
तानाशाही के कोड़ों से
चलने वाला,
धोबी का भार ढोने
वाला गधा है।
जो भारी से भारी
बोझा तो ढो सकता है
परन्तु इसके पास
अपना दिमाग नहीं है
जिसके सहारे यहां सच्चा
राम राज लाया जा सके
दूसरों पर हद से ज्यादा
विश्वास करने से
जब तुम अपना
अंत नही देख पाए।
तो इस देश की
इस देश की जनता की
निरंकुशता में जी भी
कैसे सकते थे

आलोक शर्मा

आदमी और जानवर

ठीक था
जब था पहले
आदमी..... जानवर
क्या आज ....
बेहतर है जानवर से
आदमी ..... ?
आदमी ..... जो जानवर से अधिक
रखता है
'स्व' .... ईर्ष्या .... द्वेष ..... क्रोध
उर्वर मस्तिष्क
दिया ईश्वर ने उसे
तभी करता है
सुगमता .... सुविधाओं पर शोध
तो इसमें
अनोखा क्या है ..... ?
जानवर ....
जो जीता है
प्रकृति के साथ
भीतरी संवदेनाओं के साथ
वो जीता है
वैदिक जीवन
मोह - माया से परे
बिना राग.... द्वेष .... अहंकार के
आने वाले कल से
बिना डरे
खाना..... रहना
मिल गया तो ठीक

सैक्स .... सीजन की
सीमा में फिक्स
पर ..... आदमी ..... ?
आदमी .....
जो भीतर मन में
जानवर बिछाता है
और .....
ओढ़ लेता है
आदमी होना
जितना .... जैसा
प्रकृति से मिला है
दोनों को
उस दृष्टि से
दोनों में अवगुणों की सृष्टि से
आदमी.....
कहीं अधिक जानवर है
जानवर से
ईश्वर ने धरती पर
सर्वप्रथम
जानवर की शक्ल में ही
तो भेजा था आदमी
पागल ..... मूर्ख नहीं है
ईश्वर
आखिर .... कब होगा
इस दोपाया जानवर का
सही मायानों में
आदमी होना ..... ?

सुक्षिती नन्दा

प्रार्थना

हे ईश्वर
तुम हो एक
संसार अनेक
सितारों से आगे भी .....
परोसते हो खाना
सब के आगे.....
एक भिखारन के आगे भी
रहती है जो फटे हाल
सहती है संसार का अत्याचार.....
छोटी सी चींटी के आगे भी
रहती है जो इस धरती पर.....
एक शिशु के आगे भी
माँ के पेट में.....
आने पर संसार में
करते हो पालन उस का
भेज कर दूध
माँ के द्वारा.....।
तुम ने बहुत कुछ दिया मुझे
परन्तु चाहती हूँ मैं
बस दो चीज़ें
एक तुम्हारा प्यार
दूसरी मीठी नींद
जब सोने जाऊँ
तुम्हारी विशाल गोदी में.....
समाप्त कर दो
दुखों का बोझ
मेरे जीवन से
सदा – सदा के लिए.....

रविन्द्र सिंह

वजूद

अक्सर ये सवाल खुद से पूछता हूँ,
कहाँ से आये, कौन हैं ये लावारिस बच्चे
क्या है वजूद इनका।
अक्सर हम मूकदर्शक बनकर देखते हैं इन्हें
लावारिस भीख माँगते, नहीं सोचते
कि कौन हैं वे, कहाँ से हैं लाए गए,
वाकई हैं मजबूर या बच्चे हैं
किसी के चुराए गए।
क्या नहीं है उनका कोई बचपन
उनका कोई वजूद।
कभी हम पैसे देते हैं तो
कभी देते हैं दुतकार इन्हें भिखारी कहकर।
लेकिन कुछ तो सोचना होगा हमें
उनके वजूद के बारे में।
ताकि वो भी पा सकें वही बचपन,
वही खुशियाँ अपने परिवार संग
जो मिली हैं हम सबको अपने बचपन में।
आइए हम सब मिलकर
उठाएं कोई ठोस कदम,
और लौटाएँ उन बच्चों को
उनके माता – पिता, परिवार
व वजूद उनका, ताकि ये परिस्थितियाँ
न आए कभी भी हमारे बच्चों संग।

बादल

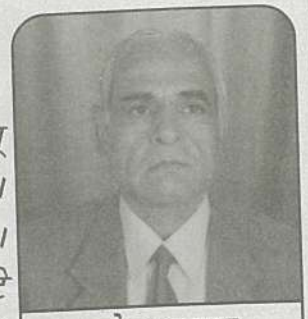

सुरेन्द्र कुमार

अन्ततः रूंधे हुए गले से धरती ने अपने पुत्र बादल से निवेदन किया, ''ऐसा लगता है कि तू मुझसे रूठ गया है। इतने माह बीत गए, किन्तु तूने एक बूंद भी मेरे शरीर पर नहीं बरसाई। तू इतना निष्ठुर क्यों हो गया है ? तू अच्छी प्रकार से जानता है कि मैं कितनी प्यासी हूँ। मेरा रोम रोम प्यास की इस व्यथा से तड़प रहा है। तू वास्तव में मेरा ही बेटा है, किन्तु माँ बेटे के रिश्ते को भूल गया है। चल तू इस रिश्ते को न पहचान। मेरे ऊपर कई वनस्पतियां, पेड़-पौधे, जीव-जन्तु एवं दूसरे प्राणी हैं जिनका जीवन तेरे ऊपर निर्भर है। इसके अतिरिक्त मेरे शरीर पर एक आदमी नाम का प्राणी रहता है जो अपने आप को बहुत शक्तिशाली समझता है। उसने मेरे शरीर के ऊपर एवं भीतर बड़े-बड़े निर्माण करके मुझे पीड़ित किया है। वह भी आज तेरे न बरसने पर परेशान है। तू तो जानता है कि मैं माँ हूँ एवं अपने ऊपर रहने वाले किसी भी प्राणी को दुःखी नहीं देख सकती। इसीलिए तुम्हें पुनः निवेदन करती हूँ कि एक बार बरस कर तू इस आदमी को दिखा दे कि वह अपने को कितना भी शक्तिशाली समझे किन्तु वह तुझ पर निर्भर है।''

धरती की इतनी बात सुनकर बादल ने उत्तर दिया, 'माँ, वास्तव में मैं तेरी मजबूरी समझता हूँ। मैं आजकल के आदमी के बेटों की तरह निष्ठुर नहीं हूँ कि तेरे दुःख एवं दर्द को न पहचान सकूं। वास्तव में तुझमें एवं मुझमें दूरी बनाने वाला यह आदमी ही है। इसने अपने स्वार्थ के लिए कई प्रकार के पेड़-पौधों को नष्ट कर दिया है एवं उसके स्थान पर खड़ी कर दी हैं विशाल अट्टालिकाएं। यह मानव निर्मित ऊँचे-ऊँचे महल पर्यावरण के संतुलन को बिगाड़ हममें दूरी पैदा कर रहे है। अब मेरे लिए यहाँ पर बरस पाना कठिन ही नहीं अपितु असंभव हो रहा है। इस पर भी मैं यहाँ पर बरसने का भरसक प्रयत्न कर रहा हूँ।''

इसके पश्चात उस बादल ने वहाँ पर बरसना प्रारम्भ कर दिया। अभी कुछ बूंदे ही वहां गिरी थी कि हवा का ऐसा झोंका आया कि उस बादल को वहाँ से दूर ले गया।

चोरी के फूल

दादा एवं उनका पांच वर्षीय पोता रोज सायं पार्क में जाते। दादा तो अपने मित्रों में गप्पें हांकते एवं पोता झूले आदि से खेलता। एक दिन जब वह पार्क से वापिस जा रहे थे तो उन्हें कुछ बच्चे फूल तोड़ते हुए नजर आए। दादा ने उनको रोका एवं कहा कि जगह-जगह पर लिखा है फूल तोड़ना मना है। इसलिए तुम्हें फूल तोड़ने नहीं चाहिए। इसके अतिरिक्त यह चोरी करना है एवं जो फूल आप ले जाओगे वह चोरी के कहलाएंगे।

कुछ ही पग आगे बढ़ने पर बच्चे ने देखा कि उसके दादा ने पहले इधर-उधर देखा एवं निश्चय किया कि उन्हें कोई देख तो नहीं रहा है। जब उन्हें यह निश्चय हो गया कि उन्हें कोई भी नहीं देख रहा तो उन्होंने झट से दो फूल तोड़कर जेब में डाल लिए। बच्चे ने जब दादा की इस हरकत को देखा तो उससे चुप नहीं रहा गया एवं उसने दादा से प्रश्न किया, ''दादा जी! क्या यह फूल चोरी के नहीं हैं ?''

दादा ने उत्तर दिया, 'बेटा यह फूल हमने अपने लिए नहीं अपितु मंदिर में भगवान जी को चढ़ाने के लिए तोड़े हैं।'

'तो भगवान जी को चोरी के फूल पसंद है?' बच्चे को प्रश्न का दादा जी के पास कोई उत्तर नहीं था।

रिसेप्शन पार्टी

राजेश 'पंकज'

सुबह से आनन्द के मन में कुछ खटक रहा था मानों कहीं किसी ने कोई टाइम बम छिपा रखा था । क्या था, कहाँ था, कुछ समझ नहीं आ रहा था लेकिन एक घड़ी की टिक-टिक निरन्तर जारी थी।

रेलगाड़ी बड़े छोटे स्टेशनों को छोड़ आगे भाग रही थी लेकिन ध्यान बार-बार पीछे कहीं अटक जाता था । सब सामान बार-बार चेक कर लिया था । रेल टिकट भी सही सलामत थे । आनन्द पत्नी, बेटी, बेटे के साथ नोक-झोंक में शामिल भी था लेकिन भीतर से कहीं अनमना सा था। कुछ था जो छूट गया था लेकिन याद नहीं क्या था ।

रात के करीब आठ बज रहे थे जब गाड़ी नई दिल्ली के स्टेशन पर रुकी । कुछ यात्री नई दिल्ली से गाड़ी में सवार हुए । सामान से लदे-फ़दे जब वे लोग आनन्द की बर्थ के पास से गुजर रहे थे तो अचानक एक यात्री को देख कर मन में कहीं बुझी हुई टयूबलाईट जगमगा उठी। लौटी हुई स्मृति के प्रकाश में एकाएक सब स्पष्ट हो गया। उस यात्री ने गर्म सूट पहन रखा था जिसका रंग आनन्द के लिए जाना पहचाना था। इसी रंग का गर्म सूट आनन्द ने बड़ी बेटी की शादी में सिलवाया था जिसे उसने बेटी वन्दना की ससुराल की रिसेप्शन पार्टी में पहनने का निर्णय किया था ।

पिछली रात ही आनन्द ने वह सूट इस्तरी करवा कर नई शर्ट तथा नेक टाई के साथ हैंगर में बेडरूम में खूंटी पर लटकाया था । बेटी की ससुराल जाने के लिए उन्हें लगभग 22 घण्टे की रेल यात्रा करनी थी । यात्रा में उस पोशाक को पहनना कष्टदायक होता, इस लिए उसका विचार था कि वस्त्रों को हैंगर सहित रेलगाड़ी के कंपार्टमेंट में लटका देगा और गंतव्य पर पहुंचने से पहले पहन लेगा ।

उस यात्री के वस्त्रों को देख कर आनन्द सुबह से जारी बेचैनी से मुक्त हो गया लेकिन टाइम-बम की अनुभूति अचानक साकार हो उसके सामने आ खड़ी हुई । लौटी स्मृति सचमुच टाइम-बम के समान ही थी और उसके सीने में धड़कन के साथ घड़ी की टिक-टिक भी तेज हो गई थी । हुआ यह था कि घर से रवाना होते समय नया गर्म सूट बेडरूम में ही छूट गया था । उसके इलावा साथ में एक साधारण जीन्स और टी-शर्ट बची थी और कुर्त्ता पाजामा उस ने पहन रखा था । अजीब सी स्थिति थी । इतनी दूर से यात्रा करके जिस समारोह में जा रहे थे उसमें पहनने के लिए ढंग के कपड़े भी साथ नहीं थे ।

गाड़ी नई दिल्ली स्टेशन से छूट रही थी लेकिन आनन्द का ध्यान अब भी कंपार्टमेंट के गलियारे की ओर था ।

पत्नी लाजवन्ती ने पुकारा, ''उधर क्या देख रहे हो ? कोई जान-पहचान वाला दिखाई दिया है क्या ?''

आनन्द की तन्द्रा टूटी और गले में लटकते उस टाइम-बम से त्रस्त हो कर उसे पत्नी की ओर उछाल दिया ।

''उस आदमी का गर्म सूट देखा न ? बिल्कुल मेरे सूट जैसा है,'' आनन्द ने कहा।

''हां वैसा ही लगता है।'' लाजवन्ती ने कहा ।

''लेकिन मेरे वाला तो हम लाए ही नहीं । घर में ही रह गया'', आनन्द ने बम फ़ोड़ दिया ।

लाजवन्ती के साथ बेटा तुषार और बेटी नलिनी तीनों ही मुंह बाए आनन्द की ओर देख रहे थे।

''ओ...ओह....'' तीनों एक ही स्वर में बोले।

नलिनी चिन्ता भरे स्वर में बोली, ''पापा, रिसेप्शन पार्टी में क्या पहनोगे ?''

लाजवन्ती झल्लाते हुए बोली, ''कितनी बार कहा था पहन कर चलो। मेरी कभी मानी है ? अब क्या करेंगे?''

आनन्द गंभीर स्वर में बोला, ''जो हो गया, सो हो गया। वहाँ पहुँच कर सोचेंगे''।

''बेटी की रिसेप्शन है। सब की नजंर हम पर होगी। क्या कहेंगे सब लोग ?'' लाजवन्ती आक्रोश से बड़बड़ा रही थी।

रेलगाड़ी पकड़ने की दौड़ भाग में यह चूक होना स्वाभाविक ही था। सुबह रेलवे स्टेशन जाने के लिए टैक्सी बहुत देर से पहुंची थी। टैक्सी के आते ही सब लोग सामान सहित हड़बड़ी में टैक्सी में बैठे थे। ऐसे में कोट - पेंट साथ लेना याद ही नहीं रहा। पिछले दो दिन भी तो आनन्द के लिए बहुत व्यस्ततापूर्ण थे। बेटी की विदाई के पश्चात सभी रिश्तेदारों को विदा करने के अतिरिक्त अनेक प्रकार के काम निपटाने जरूरी थे।

चूंकि परिवार को बेटी की ससुराल में जाना था। इसलिए जाने से पूर्व बिखरे सामान को समेटना और बहुत से लोगों जैसे हलवाई, टैंटवालों को किए जाने वाले भुगतान करना जरूरी था।

रेलगाड़ी की बन्द शीशों वाली खिड़कियों के बाहर छाई धुंधं चिलचिलाती सर्दी का आभास दे रही थी। डिब्बे के भीतर का वातावरण ठिठुरन से मुक्त था। वातानुकूलित कंपार्टमेंट में बाहर की ठण्डी हवाओं का प्रवेश न होने से मौसम का असर महसूस नहीं हो रहा था। रास्ते में किसी गांव व शहर को देख कर लोगों के गर्म कपड़ों में लिपटे चेहरों से दिसम्बर की कंपकंपाती ठंड का पता चलता था। यात्रा पूरी होने पर रेलगाड़ी के गर्माहट वाले वातावरण से निकल कर सर्दी का सामना करना होगा, ऐसे में गर्म सूट की कमी और भी खलेगी।

लेकिन चलती रेलगाड़ी में इस समस्या का समाधान कर पाना असंभव था। यूं भी गाड़ी के पहुंचने का समय सुबह का था। तब तक तो धूप खिल उठी होगी। सर्दी का प्रभाव कुछ तो कम हो जाएगा। घर से निकलते समय जो गर्म कपड़े पहने थे वे सर्दी के लड़ने हेतु पर्याप्त ही थे। गंतव्य शहर में पहुंच कर, पहले से ठहरने हेतु होटल बुक कर रखा था। सादा कपड़ों में होटल तक पहुंचा जा सकता था। वहाँ पहुंच कर दिन भर रुक कर आगे की रणनीति पर विचार हो सकेगा।

रेलगाड़ी धाड़्धाड़ाती हुई भाग रही थी। रास्ते में खाने हेतु बांधा कर रखी पूरी - भाजी के डिब्बे बच्चों ने निकाल लिए थे। पत्नी ने भोजन खाने से मना कर दिया। गर्म सूट भूल जाने के कारण उस का मन उचाट हो गया था। कुछ भी खाने का मन नहीं हो रहा था। आनन्द ने समझाया, ''अभी घबराने की जरूरत नहीं है। स्टेशन पर हमारे कपड़ों को कौन देखेगा ? पहुंच कर दिन में कोई हल खोज लेंगे। खाना तो खा लो। कितने मन से खाना पका कर पैक किया था तुमने। अभी इस का आनन्द उठाओ। बाद में जो होगा देखा जाएगा''।

गाड़ी निर्धारित समय से चार घण्टे देरी से पहुंची। जब स्टेशन पर उतरे तो दोपहर का एक बज रहा था। चारों ओर सुनहरी धूप खिली थी वातावरण में ठंडक काफ़ी कम थी। पहले से होटल में कमरा बुक था। सभी टैक्सी से होटल

पहुंचे और समधी जी उन्हें होटल तक पहुंचा कर लौट गए थे । सभी ने भोजन करके कुछ देर आराम किया। शाम को आनन्द तुषार के साथ बाजार चला गया । रिसेप्शन के अवसर पर अच्छे से उपहार का प्रबन्धा करना था । लाजवन्ती और नलिनी होटल के कमरे में तैयार होने के लिए रुक गईं थीं ।

आनन्द का विचार था कि उपहार खरीदने के साथ – साथ रिसेप्शन पार्टी में पहनने के लिए कपड़ों के विकल्प पर भी सोचा जाए । तुषार का विचार था कि किसी दुकान पर रेडीमेड कपड़े खरीद लिए जाएं । उपहार खरीदने के बाद वे बाजार में एक बड़ी कपड़ों की दुकान में पहुंचे । तुषार ने पार्टी में पहनने के लिए उपयुक्त वस्त्र दिखाने के लिए कहा । सेल्समैन ने अनेक प्रकार के वस्त्र दिखाए लेकिन आनन्द को अपने लिए कोई वस्त्र जंच नहीं रहा था । जितने भी वस्त्र दिखाए वे अत्यन्त भड़कीले थे जो आनन्द को अपनी उम्र के अनुसार गरिमा पूर्ण नहीं लगे । दुकान में रेडीमेड वस्त्रों के साथ – साथ अनसिले वस्त्र भी उपलब्धा थे और उनकी सिलाई का प्रबन्धा भी था । इस के लिए दुकान के शोकेस में अनेक पोशाकें सजा रखी थीं। इन में से एक गर्म सूट आनन्द को अच्छा लगा। सेल्समैन ने बताया सूट के लिए कपड़ा चुनने पर एक सप्ताह में सूट सिल कर तैयार हो जाएगा। उन्होंने बताया कि उन्हें सूट तुरन्त चाहिए था वे एक सप्ताह तक नहीं रुक सकते । इस पर दुकानदार ने सुझाव दिया कि पार्टी के लिए अच्छी पोशाक वे किराए पर ले सकते थे । बाजार में उन्हीं की एक अन्य दुकान है जहां विवाह आदि के लिए पोशाकें और सजावटी गहने किराए पर दिए जाते हैं । दुकानदार ने उन्हें पता दे दिया ।

किराए के वस्त्रों की दुकान पर पहुंच कर फ़िर से वस्त्रों के चयन की प्रक्रिया आरम्भ हुई । काफ़ी सोच विचार के बाद तुषार ने आनन्द के लिए एक आकर्षक कोट का चुनाव किया। यह कोट आनन्द को पार्टी के अवसर के लिए उपयुक्त लगा परन्तु दैनिक प्रयोग के लिए भड़कीला लगा । तुषार का कहना था कि कोट केवल एक दिन के लिए ही लेना है पुनः इसका प्रयोग नहीं करना है। इस पर आनन्द कोट लेने के लिए सहमत हो गया। दुकानदार ने कोट का किराया दो हजार रुपये प्रतिदिन बताया तथा जमानत के तौर पर कोट की पूरी कीमत दस हजार रुपये बताई। वे दस हजार रुपये जमा करवा कर कोट ले जा सकते थे इसे लौटाने पर किराया वसूल करके शेष रकम लौटा दी जाएगी । आनन्द ने कोट पहन कर देखा तो कोट की आस्तीन कुछ ज्यादा लम्बी थी । दुकानदार ने बताया कि एक घण्टे में कोट की मरम्मत हो जाएगी ।

पत्नी लाजवन्ती ने फ़ोन करके मोबाईल पर सूचित किया कि वह और नलिनी समारोह के लिए तैयार हो चुकी थी और सभी को लिवाने के लिए समधी जी छोटे बेटे सहित होटल पहुंच चुके थे। आनन्द ने तुषार को उपहार लेकर तुरन्त होटल लौटने के लिए कह दिया। दुकानदार ने कहा कि उन्हें प्रतीक्षा करने की जरूरत नहीं है मरम्मत के बाद कोट होटल में पहुंचा दिया जाएगा । दुकानदार ने होटल का पता ले लिया तो आनन्द सामान सहित बेटे के साथ होटल के लिए चल दिया ।

होटल पहुंचे तो सभी बेसब्री से प्रतीक्षा कर रहे थे। उपहार समधी जी की गाड़ी में रखवा कर आनन्द ने पत्नी, बेटी और बेटे को पहले जाने के लिए कह दिया। आनन्द ने कहा कि वह तैयार हो कर बाद में आ जाएगा। पत्नी की आंखों में बेचैनी और प्रश्न दोनों झांक रहे थे। लेकिन वह समधी जी के सामने कुछ बोल नहीं पाई और वे सब रवाना हो गए।

आनन्द जब समारोह स्थल पर पहुंचा तो खूब चहल पहल थी। समधी जी उसे अपने साथ ले गए और आए हुए रिश्तेदारों और मित्रों से उसका परिचय कराने लगे। अंधेरा फ़ैलने के साथ सजावटी बल्बों की रंगबिरंगी रोशनी से पूरा

वातावरण जगमगा रहा था। ऊँचे मंच पर नवविवाहित बेटी वन्दना और दामाद जी शोभायमान थे। आगन्तुक लोग बारी-बारी से मंच पर जाकर नवविवाहित जोड़े को उपहार और आशीर्वाद दे रहे थे। उपहार ले कर आनन्द सपरिवार मंच पर पहुंचा तो बेटी वन्दना आनन्द की ओर हैरानी से देखती हुई बोली, ''पापा ! आप तो सबसे अधिक जंच रहे हो इस ड्रेस में। यह गर्म कोट कब लिया?''

आनन्द इस पर मुस्कुरा दिया। बेटे के चेहरे पर एक शरारती मुस्कान थी। नलिनी की आंखों में भी प्रसन्नता के भाव थे। लाजवन्ती संतुष्टि और हैरानी से आनन्द की तरफ़ देख रही थी।

कुलदीप कुमार मेहता

पुलकित मन

पुलकित मन पुलकित घर आंगन
आया कैसा दिन ये पावन
वर्षों की सेवा करने पर
छूटा है दफतर का बन्धन
पुलकित मन.....

अब होगा हर दिन अपना
पूरा करेंगे हर वो सपना
दिल के किसी कोने में जिसको
अब तक रखा था यूं दफना
पुलकित मन.....

अब न होगी भागम दौड़
दिन में भी सुस्तायेंगे
अपने प्यारे बच्चों के संग
खेलेंगें बतियायेंगे
पुलकित मन.....

नया दिन नई जिन्दगी अपनी
घर है अपना पैंशन अपनी
धौंस नहीं है किसी की भैय्या
खूब चलेगी जीवन नैय्या
पुलकित मन.....

नए जीवन का होगा आगाज़
नए छिड़ेंगे सुर और ताल
सैर और कसरत भी होगी
सेहत का रखेंगे ख्याल
नई जिम्मेवारियों के लिए
खुद को रखेंगे तैयार

मेहता बस यही चाहता है,
हम सब भी यही चाहते हैं
आप का जीवन, दुखों से सदा दूर रहे
सुखों का बरसे सावन
खुशियों से भरा रहे दामन
पुलकित मन.....

पच्चीस दोहे

विकास रोहिल्ला 'प्रीत'

दृश्य देखकर मंच भी, आज हुआ हैरान ।
चंद चुटकुले ले गये, कविता का सम्मान ।।

भरी कचहरी झूठ ने, किए वार पर वार ।
घुटनों के बल आ गया, सच का ताबेदार ।।

कसमें वे ईमान की, झूठी खाते यार ।
ले लेते हैं घूस भी, तनिक नहीं इंकार ।।

खूब चले है झूठ की, देख कचहरी धाक ।
रोज भरे दरबार में, सच की कटती नाक ।।

जंगल में तब्दील है, बस्ती का माहौल ।
मूल्यों का उड़ने लगा, देखो यहाँ मखौल ।।

निर्भय घूमें भेडिये, हिरनी है भयभीत ।
बस्ती में भी आ गई, जंगल की ये रीत ।।

नारी को जिसने सदा, समझा एक शरीर ।
वो क्या जानेगा भला, उसके मन की पीर ।।

चिड़िया, हिरनी, तितलियाँ, खोती हैं नित लाज ।
नोच रहे हैं भेड़िये, कामी कुत्ते बाज ।।

उपवन की जिनसे रही, देख सदा ही शान ।
उन कलियों को रौंदते, यह वहशी शैतान ।।

रिश्तों में होने लगे, कर्फ्यू से हालात ।
तन्हा मन को सींचती, अश्कों की बरसात ।।

दिवस लगे अब हाँफने, बैठी थककर रैन ।
अंधी-बहरी दौड़ ने, छीना मन का चैन ।।

चलते-चलते आ गये, देख कहाँ तक पाँव ।
गली-गली में शहर की ढूँढ रहें हैं गाँव ।।

घुटे-घुटे से दिन हुए, सूनी-सूनी रात ।
कैसी देखो भीड़ ने, हमको दी सौगात ।

नये दौर में खुल गए, नागफनी के भाग ।
रहा किसी को अब नहीं, तुलसी से अनुराग ।।

देख सको तो देख लो, तुम मूल्यों का ह्रास ।
डूब रहे इस दौर का, उगता हुआ विकास ।।

नये दौर में गाँव का, बदल गया है रूप ।
पहले सी अब है नहीं, यहाँ गुनगुनी धूप ।।

उन आँखों का चाहिए, अब होना उपचार ।
दर्द पराया देखकर, जिनसे बहे न धार ।।

पनघट सूने हो गए, सूखे पोखर ताल ।
वक्त चला ये कौन-सी, टेढ़ी मेढ़ी चाल ।।

उलझी-उलझी जिंदगी, मिलता कहीं न ठोर ।।
धूप, हवा, रँग, रोशनी, खुशियाँ नहीं नसीब ।

पत्थर हैं हम नींव के, जैसे चढ़े सलीब ।।
हर चाहा होता नहीं, मिल जाते हैं शूल ।

कुछ ख्वाबों के काफिले, फंदा जाते झूल ।।
विपदाओं के सामने, घुटने कभी न टेक ।

राह बंद हो एक तो, खुलती देख अनेक ।।
वक्त-वक्त की बात है, वक्त-वक्त का फेर ।

कल तक थे जो सूरमा, आज हुये हैं ढेर ।।
खड़े अकड़कर ठूँठ से, तनिक नहीं है भान ।

वे ही झुकते हैं सखे, जिनमें होती जान ।।
आँगन अब हँसता नहीं, बरगद भी है मौन ।

चुप्पी के अध्याय को, बाँच रहा है कौन ।।

कालू – एक व्यथा

आशीष कुमार

रंग भेद दुनिया के हर कोने में पाया जाता है समाज का हर तबका केवल गोरे रंग को ही अधिक महत्व देता आया है । जो लोग रंग में सांवले होते हैं उन्हें हमेशा कमतर माना जाता है। ये कहानी भी एक ऐसे ही लड़के की है – कालू । जी हाँ नाम से ही पता चल जाता है कि केवल रंग काला होने के कारण उसका नाम कालू रख दिया गया। कालू जब छोटा था माँ उसे मटके की टूटी हुई गिट्टी से खूब रगड़ – रगड़ कर नहलाती थी, कालू के रोने की आवाज पूरा मोहल्ला सुनता था पर मां को रोने से ज्यादा फ़िक्र कालू के काले रंग की होती थी।

अब अस्सी के दशक में माँ को कोई समझाता भी कैसे, जब हर कोई अपने बच्चे के नाम अमित और धर्मेन्द्र के नाम पर रख रहा होता था । खैर जाने दीजिए ये तो रोज की ही दिनचर्या थी । कुछ बड़ा होने पर कालू को दुनिया की इस रंगभेद की वास्तविकता का पता चलने लगा। धीरे – धीरे समय बीतता गया कालू अब स्कूल जाने लगा। जब साथ खेलने वाले बच्चों ने उसे कालिया, काले भूंड, पालिश के पेड़ तथा अमावस के चाँद आदि नामों से चिढ़ाना शुरू कर दिया। जो कालू से कमजोर होते उन्हें कालू पीटकर चुप करवा देता पर जो उससे ताकतवर होते उनकी दी गई विशिष्ट उपमाएं कालू को झेलनी ही पड़ती। कालू जब भी रोकर घर आता मां के पास केवल एक ही सांत्वना होती थी बेटा काले तो भगवान कृष्ण भी थे, काला रंग केवल भाग्यवान लोगों को ही मिलता है । बस यही एक लाइन थी जो बचपन से कालू मां तो क्या, अपनी मौसी चाची सभी के मुख से सुनता आया था और खुश हो जाता था। पढ़ने में क्लास में सबसे होशियार, हर बार टेस्ट में 50 में से 50 नम्बर लाता था। क्लास टीचर भी उससे खुश रहती थी परन्तु यहाँ भी रंग भेद की प्रथा ने अपना प्रभाव दिखाया, क्लास का हेड ब्याय एक स्मार्ट, गोरे लड़के को बना दिया गया। स्कूल के हर फंशन में वही छाया रहता। कालू का काम केवल दरियाँ बिछाना, कुर्सियाँ लगवाना तथा खाने पीने का इन्तजाम करना ही रहता। शायद वो ज्यादा आर्कषक नही दिखता था इसीलिए उसे हमेशा लाइम लाइट से दूर ही रखा जाता था। लेकिन हां, जो उपमा उसे गली के लड़कों ने दी थी वैसी ही उपमाएं उसे स्कूल में बराबर मिलती रही। धीरे – धीरे वक्त कटता रहा आठवीं कक्षा पास करके कालू नौवीं कक्षा में बड़े स्कूल में दाखिल हुआ। ये किशोरावस्था का वो दौर होता है जब शरीर में हर्मोन्स बदल रहे होते हैं। बचपन के निश्छल भाव अब धीरे – धीरे समाप्त हो रहे होते है। लड़के – लड़कियां अब साथ खेलने में झिझक महसूस करने लगते है। पहली बार सह – शिक्षा वाले स्कूल में जाने पर कालू को भी एक नया अहसास हुआ। वो लड़कियों के प्रति आर्कषण महसूस करने लगा था। मगर उसे शायद पता नहीं था कि इंसान का काला रंग सबसे ज्यादा केवल इसी मामले में अपना प्रभाव डालता है। कालू खूब सबके आगे पीछे घूमता पर किसी ने उसकी तरफ देखा तक नहीं। अब उसको समझ आने लगा था कि दुनिया में गोरा रंग पाने वाले रेस में हमेशा 100 मीटर से आगे दौड़ते हैं। वो कहते है ना फर्स्ट इम्प्रेशन इज द लास्ट इम्प्रेशन और फर्स्ट इम्प्रेशन केवल अच्छी लुक से ही आता है। सो अब कालू ने जान ली कि मैं भी अब गोरा होकर ही रहूँगा फिर क्या था उसी दिन से रोज का एक रूपया जो स्कूल से लौटते वक्त आटोरिक्शा में बैठने के लिए मिलता था वो उसे भी पैदल आकर बचा लेता था एक महीने में उसने 24 रू इकठ्ठे किए और पहुँच गया दुकान पर। उस जमाने में फेयर एण्ड लवली का बड़ा जोर था। हर सांवली लड़की को फेयर एण्ड लवली में अपना भविष्य नजर आता था। सो कालू ने भी 23 रू की क्रीम खरीद ली। अब कालू दिन में तीन बार रगड़ – रगड़ कर साबुन से मुँह धोता और फेयरनेस क्रीम लगाता कि शायद थोड़ा निखार आ

जाए और निखार आया भी लेकिन फेयर एन्ड लवली की कीमत में । अब वो 23 से 32 की मिलने लगी थी। लेकिन कालू का प्रयास जारी था। उम्र बढ़ने के साथ अब उसके रंग में भी कुछ हद तक गोरा पन आने लगा था या ये फेयरनेस क्रीम का कमाल था। पर सन 2000 में एसी घटना घटी कि उससे कालू पूरी तरह हिल गया। हुआ यूं कि पड़ोस में एक शादी से निमंत्रण आया। कालू अच्छी तरह तैयार होकर खूब क्रीम पाउडर पोतकर बस में जाकर बैठ गया। सारी बस बारातियों से भर चुकी थी तभी मोहल्ले की एक लड़की बस में चढ़ी और सीधा कालू के पास आकर जोर से बोली ''ओए 'काले किलाउ' तुझे किसने बुला लिया? शादी में अंधेरा करेगा क्या?'' इतना सुनते ही सारी बारातियों की भीड़ बड़े जोरों से हंस पड़ी और कालू! कालू शर्म और बेइज्जती से पानी पानी हो गया। यूं लग रहा था कि जमीन फटे और वो उसमें समा जाए । मन में गुस्सा इतना कि उसका बस चले तो दुनियां को यहीं खत्म कर दे। पर बेचारा क्या करता शर्म से सिर झुकाए वो उठा और बस से उतर कर सीधा अपने घर चला गया। लोग पीछे से चिल्लाते ही रह गए 'ओए चाँद' ओय पालिश के पेड़, बारात में तो चल, जा क्यूं रहा है । मगर उसे तो जैसे कुछ सुनाई ही नहीं दे रहा था। उस दिन उसने ठान लिया था कि पढ़ लिखकर एक दिन बड़ा आदमी बनेगा। खूब पैसा कमाएगा और ऐसी लड़कियां उसके आगे पीछे घूमेंगी। मगर होना क्या था दसवीं पास करते ही पिता जी ने स्पष्ट कर दिया कि ज्यादा पढ़ने से भी कोई फायदा नहीं है पढ़े लिखे लड़के धक्के खा रहे हैं। किसी फैक्टरी में जाकर काम ढूंढ लो और घर के खर्च को चलाने में मदद करो । मरता क्या न करता। घर में बड़ा बेटा होने के कारण ये जिम्मेदारी भी उठानी पड़ी । मात्र 15 साल की आयु में कालू एक रबड़ के पार्ट बनाने वाली फेक्टरी में 1200 रू की तनख्वाह पर नौकरी करने लगा। यहाँ उसे दुनिया की एक नई सच्चाई से सामना करना पड़ा। मालिक और मजदूर के बीच होने वाले संघर्ष का सच । लेकिन यहां एक बात अच्छी थी फैक्टरी में काम करने वाले सभी मजदूर कालू से भी काले थे और वहां रबड़ में कार्बन का प्रयोग होता था। इस वजह से अच्छा भला आदमी पूरा काला भूत बन जाता था। कालू ही वहाँ एक मात्र हाई स्कूल पास तथा शहरी बैंक ग्रांउड से था । तो उसका मान सम्मान उनके बीच थोड़ा ज्यादा होता था। किसी की चिट्ठी लिखनी हो, या रेलवे रिर्जेवेशन का फार्म भरना हो, बैंक में पैसा जमा करवाना हो, हर कोई कालू की मदद लेता। तब कालू को शिक्षा का अहमियत का अदांजा हुआ । उसने पत्राचार के माध्यम से आगे पढ़ाई का फैसला किया और 10+2 की परीक्षा पास की, उसके बाद कालेज में दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के द्वारा स्नातक में प्रवेश किया । जब कालू बी.ए. द्वितीय वर्ष में था तो फैक्टरी मालिक ने उसे अपनी एक अन्य छोटी सी फैक्टरी का सुपरवाइजर बना दिया । सारी रिश्तेदारी में बात फैल गई कि कालू की अच्छी नौकरी लग गई। बस फिर क्या था निम्न मध्यवर्गीय समाज में जहाँ लड़का छोटी मोटी नौकरी लगा, शादी के रिश्ते आना शुरू। लेकिन वहां भी वही रंग आड़े आ जाता। माँ सारी खूबियाँ गिनाने के बाद कहती, ''कोई ऐब तो नही है पर हाँ रंग थोड़ा सांवला है।'' बस यही कमी सारी खूबियों पर भारी पड़ती। लड़का पोस्ट ग्रेजूएट है, कमाता है, परिवार छोटा है, कोई नशे का ऐब नही हैं, बड़े शहर में अपना मकान है पर रंग सांवला है इसी कारण न जाने कालू कितनी बार रिजेक्ट हुआ। अब तो कोई रिश्ता आता था तो कालू को गुस्सा ही आता था। परन्तु वो कहते है न कि जोड़ियाँ ऊपर वाला बनाकर ही भेजता है । एक दिन किसी दूसरे शहर से एक रिश्ता आया रिश्ता लेकर आने वाला कालू से भी काला था। अत: वो इस वजह से तो उसे रिजेक्ट नहीं कर सकता था। तो आनन फानन में रिश्ता पक्का हो गया वो भी एक गोरी लड़की के साथ। शादी हुई, लड़की के परिवार में भी कई काले लोग मौजूद थे अत: इस बार कालू के रंग को लेकर कोई भी उंगली नहीं उठाता था। वक्त बीता, कालू एक लड़के का बाप बना, बच्चे को देखते ही उसने ईश्वर का धन्यवाद किया क्योंकि बच्चे का रंग उसकी माँ पर था, बच्चा गोरा था। कालू में परिपक्वता आने से रंग धीरे-धीरे निखरने लगा था समय बीतने के साथ कालू को दूसरे शहर में नौकरी मिल गई और वो एक

अच्छी जिन्दगी गुजारने लगा। यहां कई नए मित्र बन गए एक कालू का अति खास बन गया। शादी के 11 वर्ष बाद कालू को एक बेटी हुई। मगर ये क्या। उसका रंग कालू के रंग पर था वो भी एक दम बचपन के कालू जैसा। पर कहते है ना बेटी सब से ज्यादा बाप को ही प्यारी होती है । सो उसे भी अपनी बेटी में कोई कमी नजर नही आती थी । वो तो उसे परी ही नजर आती थी। थोड़े दिन बाद कालू के दोस्त के घर भी एक बेटा हुआ। एक दम दूध जैसा। हाथ लगाओ तो मैला हो जाए । थोडे दिन में बच्चे साथ खेलने लगे मगर बाहर कोई कालू की बच्ची को नोटिस नही करता । लोग देखते तो नजर फेर लेते। कालू खड़ा होकर यही नोटिस करता कि आने जाने वाले सभी लोग दूसरे बच्चों को खिलाते पर कोई उसकी बेटी की तरफ न देखता। ये सब देखकर उसे अपना बचपन फिर याद आने लगा। उसकी बेटी दो साल की उम्र में शीशे के सामने खड़े होकर मुह पर पाउडर लगाकर खुश होती, तो उसे लगता कि फेयर एण्ड लवली फिर मंहगी होने वाली है। दुनिया का नजरिया वही है जो 30 साल पहले था। मुझे तो माँ भगवान कृष्ण के जैसा कह कर खुश करती थी पर मैं बेटी को क्या कहूँ- काली माँ। पर दिल को खुश रखने के लिए सबसे कहता फिरता चलो अच्छा है लड़की ज्यादा सुन्दर भी नही होनी चाहिए, जमाना खराब है। पर कालू ही जानता था कि इतिहास खुद को दोहराएगा। वही अमावस की चाँद, पालिश का पेड़ और लड़कियों में तो सुन्दरता को लेकर कुछ ज्यादा ही अपेक्षा रहती है। जमाना नहीं बदला, समाज का नजरिया अभी भी वही है। हर दशक में कालू पैदा होते है और संघर्ष करते हैं केवल उस गुण के कारण जिसमें उनका कोई दोष नही होता।

तार तार रिश्ते

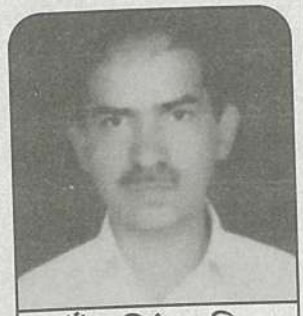

चाँद सिंह दहिया

रिश्ते अब तार-तार हो गए हैं, न जाने सब कहां खो गए हैं
रिश्ते अब मोबाइल के व्आटस-अप में सीमित हो गए हैं।
घण्टों बैठे आसमां को निहारा करते थे, कहीं कोई उल्का पिण्ड देखा तो
टूटा तारा कहते थे, आकाश गंगा को भूतों का रास्ता बताते थे।
पडोसी का सहारा खो गया, न जाने कहाँ भीड में एक बेचारा खो गया।
अपनों की तलाश में अपनों मे ही बेगाना हो गया,
रिश्ते अब तार तार हो गए है, न जाने सब कहां खो गए हैं।
गांव गए थे कि कोई अपना मिलेगा, भूला बिसरा सा कोई साथी मिलेगा
लेकिन कहां किसी को फुरसत थी, ये तो मेरी ही हसरत थी।
सब साथी गांव से न जाने कहां खो गए थे, शायद वो भी शहरी हो गए थे।
जिस शहर से उन्हें ढूढने आए थे, वो तो उसी शहर में कहीं खो गए थे।
रिश्ते अब तार-तार हो गए हैं, न जाने सब कहां खो गए हैं।

जीवन संगीत

संदीप भसीन

यह जीवन हमें ईश्वर ने दिया है। इसे यदि ईश्वर का प्रसाद समझ कर जिया जाए तो जीवन जीने का मजा ही कुछ और है। हम तो अपनी मर्जी से साँस भी नहीं ले सकते। यह एक-एक सांस हमें ईश्वर ने प्रदान की है। अत: हर पल हर समय उसका शुक्रिया अदा करना चाहिए। जितना ज्यादा हम शुक्रिया अदा करते हैं उतना ही उसके समीप होते जाते हैं। हर पल मेरा प्रभू मेरे साथ है यह एक बहुत ही प्यारा सा अनुभव है। परंतु यह अनुभव एकदम से नहीं हो जाता। इसके लिए जरूरी है ध्यान लगाया जाये। ध्यान लगाने से पहले जरूरी है अपने अंत:करण एवं विचारों की शुद्धि। सबसे पहले अपने आप से प्रेम करना। मेरे मन में तो प्रेम ही प्रेम बसा हुआ है। दुनिया के समस्त प्राणियों से प्रेम करना। एक भी प्राणी ऐसा नहीं होना चाहिए जिसके प्रति आपके मन में द्वेष की भावना हो। अहम एंव बदला लेना इत्यादि भावनाओं को अपने मन से पूर्णतया: निकाल देना। सबके लिए दुआ मांगना। सबको आर्शीवाद देना। अगर कोई गलत करता है तो करे, यह उसका कर्म है। हो सके तो उसे समझाना, ना समझ में आए तो माफ कर देना।

पवित्रता, शांति, सद्भाव यह सब परमात्मा के गुण हैं। इन गुणों को अपने अंदर समाने से सच्चे आनंद की प्राप्ति होती है। वैसे भी जीवन में हम जो कुछ भी कर रहे हैं वह सब आनंद के लिए ही तो है। अपने विचारों को पवित्र कर लेने से अगर असीम आनंद की प्राप्ति होती है तो और क्या चाहिए। ऐसा करने से मनुष्य ईश्वर के करीब और संपूर्णतया इन्हीं विचारों से ओत-प्रोत हो जाता है तो नर एंव नारायण का अंतर भी समाप्त हो जाता है। विपरीत परिस्थितियां आने पर वह कभी विचलित नहीं होता अपितु ऐसी स्थिति आने पर वह भगवान का शुक्रिया अदा करते ऐसा समझता है कि भगवान उसके विश्वास की परीक्षा ले रहे हैं और वह एक किनारे पर खड़ा होकर हंसकर कहता है कि भगवान कर जो करना है और जब भगवान ने ही करना है तो वह तो अच्छा ही करेगा।

आज हम जो भी हैं या जो भी भोग रहे हैं वह हमारे पुराने कर्मों व वर्तमान में जो कर रहे हैं उन्हीं की प्लस माईनस की बैलैंस स्टेटमैंट है। जिस प्रकार हमें शुक्रिया कहने वाले लोग बहुत पसंद होते हैं उसी तरह भगवान को भी अपना शुक्रिया अदा करने वाले बच्चे बहुत ही पसंद है। ऐसे बच्चे उसे बिल्कुल भी पसंद नहीं होते जो हर समय नाराज रहते हैं। ताने मारते रहते हैं। ऐसा मनुष्य कष्ट ही पाता है। वैसे भी मैडिकल साईंस आज यह मानती है कि हर समस्या की जड़ हमारी नकारात्मक सोच ही है तो क्यों ना इसे सकारात्मकता (Positivity) में बदल दिया जाये।

अंत में मैं आपको अपना एक छोटा सा अनुभव बताता हूँ। कांच की पानी से भरी हुई तीन बोतल ली और एक बोतल के ऊपर मैंने लव, पोजटिविटी एंव शिव परमात्मा लिखा। दूसरी के ऊपर नफरत, हिटलर एवं रावण लिखा, तीसरी के ऊपर नारमल वाटर लिख दिया। तीनों बोतलों में मैंने मसूर की साबुत दाल के 2-2 दाने डाल दिये। अब सात दिन के लिए प्रतिदिन सबसे पहले जिस बोतल पर मैंने लव पोजटीविटी एंव शिव परमात्मा लिखा था उसको दस मिनट के लिए अपने सामने रखा और ध्यान किया कि उस पर परमात्मा की किरणें पड़ रही हैं और वह पानी बहुत ही पवित्र हो रहा है। इसके पश्चात् मैंने उस बोतल को हटाकर दूसरी बोतल अपने सामने रखी जिस पर नफरत, हिटलर एंव रावण लिखा था और उसको गुस्से, नफरत इत्यादि नैगेटिव वाइब्रेशंस दी। जिस बोतल पर मैंने नार्मल वाटर लिखा था उसको मैंने कुछ नहीं किया एंव एक साईड पर पड़ा रहने दिया। यह क्रिया मैंने 7 दिन दस-दस मिनट के लिए दोनों बोतलों पर रोज की। आठवें दिन यह चमत्कार देखा कि जिस बोतल पर लव शिव परामात्मा लिखा था उसमें दाल का दाना

अंकुरित हो गया और उस पानी में से हल्की हल्की भीनी भीनी खुशबू आ रही थी। जिस बोतल पर मैंने नफरत, हिटलर एंव रावण लिखा था उसमें दाल का दाना जल गया, काला पड़ गया और पानी से हल्की बदबू भी आ रही थी। जिस बोतल पर नार्मल वाटर लिखा था और उसको कोई भी वाईब्रेशन नहीं दी गई थी उसमें नार्मल प्रोसेस में दाल के दानों पर हल्की हल्की फंगस लग गई थी क्योंकि आठ दिन पानी में पड़े रहने से फंगस का लगना स्वाभाविक था।

अंत में इतना ही कहना चाहूँगा कि अगर मेरे सामने दो फुट की दूरी पर पानी की जो बोतलें पड़ी हैं उन पर मेरे विचारों का इतना अधिक प्रभाव हो सकता है तो हमारे शरीर में जो 70% पानी ही है उस पर विचारों का कितना अधिक प्रभाव होगा। अतः हमें अपने विचार अच्छे और बहुत ही अच्छे रखने चाहिए। विचारों को अच्छे करने के लिए प्राणायाम बहुत ही लाभदायक है। प्राणायाम करने से 20 गुना आक्सीजन हमारे शरीर के अंदर जाती है और शरीर की समस्त प्रणालियों को स्वतः ही अच्छा कर देती है। जिससे हमारे शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य का बहुत ही अच्छा लाभ मिलता है।

जिस प्रकार हमारे शरीर को पौष्टिक भोजन की रोज आवश्यकता है उसी प्रकार हमारे मन, जिसने कि शरीर को भी कंट्रोल करना है उसको अच्छे विचार रोज सुनने चाहिए।

अच्छा आप सब स्वास्थ्य रहें, खुश रहें और आपका जीवन एक संगीत की लहरियों से गुंजयमान हो जाये और आप सब का एक-2 पल खुशियों से आबाद हो। ऐसा मैं दिल से दुआ करता हूँ। आप सबका भला हो।

प्रमोद कुमार गुप्ता 'मन्टू'

बेगाना

(एक कविता मेरी धर्मपत्नी किरण प्रमोद मद्धेशिया जी को समर्पित है।)

परेशानियां आपको चलना सिखाती हैं,
जद्दोजहद से भरी जिंदगी से,
लड़ना सिखाती हैं,
राहों में मिलेंगे कांटे बहुत,
वही कांटों में आपको संभलना सिखाती है,
मत घबराना मेरी प्रिये ''किरण'',
अपनों के दुर्व्यहवार से,
अपने ही आपको बेगाना बनाना सिखाते हैं,
आएगा वक़्त आपका भी ऐ ''किरण'',
मंटू के व्यहवार से आपका
हृदय प्रेम रस से भर जाएगा,
जिसने आज आपको रुलाया है,
वो खुद एक दिन अश्कों के लिए तरस जाएगा!

राम-राम जी राम-राम

संदीप कुमार 'मान'

हमें एक-दूसरे को मिलते वक्त राम-राम बोलना चाहिए आओ इसका महात्व समझते हैं।

राम = 'र' + 'आ' + 'म'

''र'' व्यंजनमाला का 27वां अक्षर है।

''आ'' स्वरमाला का दूसरा अक्षर है।

''म'' व्यंजनमाला का 25वां अक्षर है।

इन सबको जोड़ने पर कुल जोड़ 54 (27 + 2 + 25 = 54) बनता है और 2 से गुणा करने पर 108 (54X2) बनता है क्योंकि ''राम-राम'' में राम का दो बार उच्चारण होता है, इसलिए राम-राम बोलने वाले इंसान का 108 मनकों की माला के जाप करने के बराबर फल मिलता है।

राही दरवेश

जिद्द

जब तक जिद्द में जुनूं ना हो, बदलने का
मुझे..... या तुझे कोई बदल नहीं सकता।
दम हो कितना भी पर हौंसले से हो अपंग
'राही' एक कदम भी चल नहीं सकता।।
तेज आंधियां हैं तो क्या, धुंधला आसमां है तो क्या,
इन्हीं हवाओं को चीर, रोशन ये जहां करना है।
जो कमियां डराती हैं तुम्हें, रात भर जगाती हैं तुम्हें,
अपने हौंसले से इन्हें परेशां करना है।।
जमाना चाहे कुछ भी कहे
परवाह ना कर, सीधी निगाह कर,
लक्ष्य को भेद 'राही'..... सिल पे निशां करना है।।

सुभाषिनी

नीतू सिंह

सुभाषिनी जो कि मध्यमवर्गीय परिवार से ताल्लुक रखती थी पढ़ने लिखने में होशियार और सभी एक्स्ट्रा एक्टीविटिज में भी माहिर थी । शादी लायक होने पर पिता ने राज्य के सरकारी कार्यालय में काम करने वाले रमेश से उसकी शादी तय कर दी । बड़े धूम-धाम से शादी सम्पन्न हुई। उम्मीद से बढ़कर सुभाषिनी को हर चीज मिली थी । बहुत खुश थी सुभाषिनी - ''रमेश जी मेरी किस्मत इतनी अच्छी होगी मैंने कभी ख्वाब में कल्पना नहीं की थी मैं आप जैसा पति और परिवार पाकर बहुत खुश हूँ और बस एक चीज और, कि मुझसे दूर मत जाना'' रमेश भी सुभाषिनी की आँखों में डूबकर बिना कोई जवाब दिए मूक भाव से हामी भर रहा था सबकुछ बहुत अच्छा चल रहा था कि अचानक रमेश के तबादले के आदेश ने सुभाषिनी को झकझोर कर रख दिया ।

रमेश का तबादला कानपुर से मुरादाबाद कर दिया गया कई घण्टों का अन्तराल था अतः रमेश महीने में एक-दो बार ही घर आ पाता था । इधर सुभाषिनी की सास जो कभी सुभाषिनी को गृहलक्ष्मी और अपनी बेटी वाला प्यार देती थी उसका नया रूप सुभाषिनी के सामने आने लगा । हर पल सुभाषिनी को ताने मिलते ''ये क्या बनाकर रखा है दाल है कढ़ी, कौन सी दाल बनाई है, मां ने यही सिखाया है क्या? कोई सलीका तरीका नाम की चीज तुम में नहीं - रसोई से बचती तो लेन देन के ताने शुरू हो जाते, ''क्या सिलाई मशीन दी, क्या वाशिंग मशीन, ये भी कोई कम्पनी है । इससे बढ़िया तो मैंने अपनी बेटी की शादी जब 5 साल पहले की थी तब दी थी अब तो वैसे भी काफी आधुनिक तकनीक आ गई है । कड़वे शब्द सास हर पल सुभाषिनी पर बरसाती पर सुभाषिनी पत्थर की तरह मौन बस सब कुछ सुनती रहती प्रतिउत्तर में एक शब्द भी नहीं निकलता । बस आँखों में बुझे हुए सपने और आंसुओं को सम्भालती रहती।

रमेश को एक महीने के अन्तराल पर जब भी घर आना होता तो यही सोचता - सुभाषिनी के साथ प्यार भरा समय बिताये । जितनी दूरी रही है एक महीने में वो सब सुभाषिनी को खुशियां देकर भर देगा । विचारों का एक पूरा पुलिंदा रमेश के साथ होता । पर ये क्या सुभाषिनी न अब पहले की तरह श्रृंगार करती, न हंसती, न मधुर बातें करती क्या हो गया सुभाषिनी को ? रमेश भी जैसे तैसे छुट्टी खत्म करता और गुमसुम वापस चला जाता । यही सिलसिला एक वर्ष तक चला । रमेश ने परेशान हो कर माँ से सुभाषिनी को साथ ही मुरादाबाद ले जाने गुजारिश की । माँ भी राजी हो गई । अपना और सुभाषिनी का तत्काल का टिकट करवाया और सुभाषिनी और रमेश पहुँच गए - मुरादाबाद । दिल में उधेड़ बुन चल रही थी । बस अब नई जिंदगी की शुरूआत बड़े सुकून से होगी जो प्यार और समय मैं अपनी पत्नी को नहीं दे पाया अब सारी कमी पूरी करने की कोशिश करूंगा रमेश कल्पना कर रहा था ।

पत्नी को खुश करने के लिए रमेश सब वही कर रहा था जो वह चाहती थी । सुभाषिनी कभी खुश नजर नहीं आती और जब तब बस दोहरा चरित्र दिखाती - बेचारे रमेश को समझ नहीं आ रहा था कि अब क्या कमी रह गई ।

रविवार के दिन छुट्टी की वजह से रमेश अपनी पत्नी के कामों में हाथ बंटवाने के लिए धुले हुए बर्तनों के करीने से लगाने के लिए जैसे ही हाथ आगे बढ़ाया रसोईघर में खड़ी सुभाषिनी ने उबलती हुई चाय रमेश के हाथ पर गिरा दी और बिना हाल पूछे ड्रांइगरूम में चली गई । बड़बड़ाती हुई ''अब भुगतो किसने कहा था दिखावा करने को, चिपकते चले जाते हो, सोचना था ना पहले कि मैं किचन में काम कर रही हूँ । जगह भी थोड़ी है क्या जरूरत थी अन्दर

घुसने की । रमेश हैरान था – सुभाषिनी की बातों पर । कि दवाई देने या प्यार के दो शब्द बोलने की बजाय ..... अक्सर जब तब सुभाषिनी रमेश को तंग करती रहती । खाने की थाली सामने रखकर कभी नमक ज्यादा डाल देती तो कभी मिर्च, किचन का भी बुरा हाल था । और फिर सारे इल्जाम भी बेचारे रमेश पर लगा देती ।

रमेश और सुभाषिनी के बीच इतना फासला आ गया था कि जब भी रमेश उससे नजदीकी बढ़ाने की कोशिश करता – सुभाषिनी गाली – गलौज पर भी उतर आती । सामने बहुत परेशानियां थी बेचारा रमेश अपना दुःख किसी से न तो बांट सकता था न ही सहन शक्ति बची थी ।

एक दिन थक हार कर सुभाषिनी से बोला – ''देखो शायद तुम माँ जी के साथ कानपुर में खुश नहीं थी इसलिए मैं तुम्हें अपने साथ यहाँ मुरादाबाद ले आया । सुभाषिनी तुम मेरी पत्नी हो । – अगर जाने अन्जाने में कोई गलती हो गई हो तो प्लीज क्षमा कर दो पर प्लीज मुझसे दूर मत जाओ । मैं जी नहीं सकता तुम्हारी इस बेरूखी के साथ ।''

सुभाषिनी चीख पड़ी – ''खबरदार जो मुंह से एक शब्द निकाला, तुम और तुम्हारी माँ – दोनों ही एक जैसे हो । दोनों का चरित्र और रंग रूप भी एक ही है । मुझसे झूठा प्यार दिखाने की जरूरत नहीं ।''

रमेश दिन प्रतिदिन बिखरता जा रहा था । समझ नहीं आ रहा था क्या करे । अस्त – व्यस्त सा कार्यालय पहुंचता, कपड़े भी बिना प्रैस, दाढ़ी मूंछ और बालों ने भी दुबार बसेरा बनाना शुरू कर दिया । दो महीने बीत गए सुभाषिनी से बात किए । पर सुभाषिनी अब बदलने लगी थी । शान्त रहती कोई शोर की आवाज कमरे में नहीं सुनाई देती । एक दिन सुबह जब रमेश को शेविंग करने की इच्छा हुई उसने शेविंग किट ज्यों ही हाथ में ली सुभाषिनी दौड़कर आई और रमेश के गले लगकर रोने लगी – ''प्लीज शेविंग मत करो आप यूं ही बहुत अच्छे लगते हो आप अपनी माँ जैसे बिल्कुल नहीं हो – मुझे माफ कर दो । आप के चले आने के बाद मुझे सासू माँ ने बहुत सताया । मैं जब भी तुम्हारी शक्ल देखती मुझे सासू माँ की शक्ल नजर आती और फिर मुझे उन्हीं के अत्याचार याद आते ही तुम्हारी ''क्लीन शेव'' सूरत में सासू माँ ही नजर आती ।''

सुनकर रमेश हैरान रह गया । सुभाषिनी के बदले हुए व्यवहार की जो गुत्थी वह इतने दिनों से सुलझा नहीं पा रहा था वह पल भर में खुद सुभाषिनी ने सुलझा दी थी । उसने सामने लगे आइने में अपनी सूरत देखी – दाढ़ी मूछें बेतरतीब ढंग से चेहरे पर उग आई थी । दाढ़ी मूंछों के नीचे उसने अपना चेहरा पहचानने की कोशिश की । उसे लगा वह कहीं से भी अपनी माँ जैसा नहीं है । अब तो बिल्कुल भी नहीं ।

हिन्दी का श्रृंगार राष्ट्र के सभी भागों के लोगों ने किया है, वह हमारी राष्ट्र भाषा है।

– चक्रवर्ती राज गोपालाचारी

नरेन्द्र बड़गुजर

आखिर क्यों?

जग सुता का, दुश्मन बना,
नदियां असंख्य पीकर भी, सागर खारा बना।
आखिर क्यों?
कोई कहे सुता, मुण्डेर की चिड़िया,
जन्म से पहले, किसी ने मार दिया
आखिर क्यों?
कोई कहे बेटी है, तू कर्म-जली,
किसी को तू, रूप सागर मिली।
आखिर क्यों?
कोई कहे तू, व्यापार की वस्तु,
सदियों से बीच, बाजार बिकी।
आखिर क्यों?
कोई कहे तू लैला, कोई कहे तू हीर,
समझ न पाया, कोई तेरी पीर।
आखिर क्यों?

कोई कहे तू, व्याभिचार की मूरत,
प्रताड़ना सह, खण्डित सी सूरत।
आखिर क्यों?
कोई सुत लालसा में, दे मार तुझे,
खत्म हुआ मातृ-पितृ प्रेम, जैसे धर्माचार।
आखिर क्यों?
सदियों से चढाएं तुझे, रूढियों की बलि,
सदा नाहर संग सती हुई, नव रूप में तू मिली।
आखिर क्यों?
कोई कहे श्वेत वस्त्र पहन तू, फूट गये तेरे कर्म,
नहीं निभाया किसी ने, इन्सानियत का कभी धर्म।
आखिर क्यों?
आज प्रण करेंगें, मिल कर सारे,
लड़का-लड़की एक-समान,
नहीं सहेगें ये अपमान।।

पुस्तकों का मूल्य रत्नों से भी अधिक है क्योंकि रत्न बाहरी चमक दमक दिखाते हैं जबकि पुस्तकें अंतः करण को उज्ज्वल करती हैं।

मोनिका कुमारी

प्रिय/प्रभात

जब प्राण होकर भी निष्प्राण
हो जाओ,
जब प्रेम से ओत-प्रोत होने पर भी
प्रेम विहीन हो जाओ,
जब लूट लिया हो तुम्हारे सभी
सभी सपनों को,
सभी कलाओं को,
सभी भावनाओं को,
किसी तुम्हारे अपने ने ही ।
राह चलते हाथ तुम्हारा,
जब कर दिया गया हो तुम्हें
इतना अकेला
कि सुबक जाओ अपनी
छाया देखकर ।
जब अपने कोमल हृदय पर
झेलते सहन करते
यातनाओं का आघात
हो जाओ तुम पूर्ण क्लांत,
जब छटपटाता रहे तुम्हारा हृदय
पाने को जीवन से विरक्ति ।
तब तुम, एक बार के लिए -
सिर्फ़ एक बार के लिए
आ जाना मेरे पास,
मैं तुम्हें वहीं बैठी मिलूंगी
रातरानी के नीचे, जहां बैठ कर करते
थे हम दुनिया भर की बातें,
और डूब जाते थे एक दूसरे के
प्रेम में होकर यूँ सराबोर,
कि भूल जाते थे -
हमारे दुनिया में होने को ।
बस !
आकर रख देना तुम मेरी
गोद में अपना सिर निःशब्द
ठीक जैसे कोई अबोध बालक
प्रेम पाने की आस में,
रखता हो माँ की गोद पर,
बस !
मत पूछना किस हाल में जिन्दा थी
तुम्हारे जाने के बाद से
अब तक -
फिर भी चाहो, तो
आँखों से सब जान लेना
कि भर जाना तुम शांति से,
कि लिपट जाना चन्दन वृक्ष में
लिपटे व्यालों की तरह,
तुम भूल जाना अपनी विगत
परिस्थितियों की अभिष्ट यादों को,
कि फिर कर लेना अनुभव
उस प्रेम का मेरे -
जो सदा से ही था निःस्वार्थ
प्रति तुम्हारे ।

क्या खिताब दे

गौरी

यादों की आँधियों से एक-एक तिनका समेट कर उन्हें अपने आँचल में बाँधते हुए सिया ने सुकून की सांस ली। लेकिन जब दिल, दिमाग और आत्मा दहकने लगते हैं तब आँचल बँधा यादों का इक छोटा-सा तिनका उस आँच को खुरेदता अनायास ही पश्चाताप की आग भड़क उठती। ऐसा क्यों? शायद इसलिए कि जब हम इस दुनियाँ में आते हैं तभी कोई अजनबी हाथ या अपना हमें धरती पर गिरने से पहले ही थाम कर सहेज लेता, शरीर पर लगी गन्दगी को साफ कर, देखरेख और हमारा पोषण करने की तरफ ही सारा ध्यान लगा देते तब से लेकर मृत्यु-पर्यन्त तक हम जीविका कमाने हेतु ही ज्ञान प्राप्त करने में एवं शारीरिक सुविधाएँ पूरी करने में ही अपना जीवन व्यतीत कर देते। इस शरीर में नन्हीं-सी आत्मा भी है, उसे कहाँ देखते हैं जो अपने ही द्वारा परिभाषित किए गए कर्मों के नीचे दबकर रहने लगती है उद्देश्य के लिए हुए जीवन को उद्देश्यहीन होकर व्यतीत करते हुए अपने ही भीतर उस ईश्वरीय शक्ति को महसूस करने का ज्ञान कहाँ प्राप्त करते हैं? जीवन की सांसों को सुलभ बनाने के लिए किए गए कर्म आत्मा को दुर्लभता के मार्ग पर धकेलते जाते हैं जब जिन्दगी के किसी मोड़ पर पीछे मुड़कर देखते हैं तब आत्मा की आँखों से गिरे हुए आँसू पश्चाताप की आग को भी कहाँ बुझा पाते हैं?

सिया की आँखों की पुतलियों के भीतर आज से बाईस वर्ष पूर्व का दृश्य घूमने लगा। वो ट्रेन की आवाज और उसका धीरे से फुसफुसाना, कुछ न सुनकर भी बहुत कुछ सुन लेना, चेहरे की तरफ न देखते हुए भी उसे पढ़ लेना, दिल की चाहत को आत्मा से महसूस करना, उसकी इच्छाओं के समक्ष खुद की इच्छाएँ अत्यन्त गौण हो जाना, हर रिश्ते के होते हुए सिर्फ उस रिश्ते का अहसास ही रह जाना, क्या यही प्यार है? समझ में नहीं आता क्यों कोई बेगाना अपनों से भी बढ़कर दिल के आईने में अपनी जगह कैसे बना लेता है? कितना भी दूर हो लेकिन पास होने के अहसास को बनाए रखता है। वो क्या दे देता है उस इक पल में जो वर्षों से जुड़े अपनों के द्वारा दिए प्यार भरे उपहारों को पीछे छोड़ देता है। बस उस पल को बार-बार जीने की इच्छा जीवंत हो जाती है। शारीरिक और मानसिक सुख में भेद करना मुश्किल हो जाता है।

जब से सिया के जीवन में मनन आया, आकर कब तीन फूल उसके अस्तित्व की नींव में सजा कर या यूँ कहूँ गिरा कर चला गया तब से दिल और दिमाग का मंथन अनवरत चलता रहता है। इन स्थितियों का जिम्मेदार किसे माने अपने को, अपनों को, परिस्थितियों को या मनन को? दोनों ने ही अपने परिवार के खिलाफ खड़े होकर अपने संसार सम् परिवार की नींव रखी। दीवारों को खड़ा करने के लिए मेहनत की ईटों संग प्यार का सीमेंट और सच्चाई की रेत की आवश्यकता होती है जब मेहनत की ईटें ही न हो तब प्यार के सीमेंट और सच्चाई की रेत का क्या अस्तित्व? मात्र नींव बनाने से घर नहीं बना करते, घर को बनाने के लिए दीवारें, छत, फर्श भी बनाने पड़ते हैं उस फर्श पर पाँव रखने के बाद ही अर्श का एहसास होता है दीवारें दिशाओं का और छत सुरक्षा कवच के समान बन पड़ते हैं। बस नींव बनाने से क्या मिला? इक अधूरापन और उस अधूरेपन से जुड़ी तीन अधूरी जिन्दगियाँ। हाँ दोनों ही दोषी हैं इन तीन अधूरी, गुमनाम जिन्दगियों के, लेकिन खुद का और मनन का विश्लेषण करने पर सिया को खुद का दोष अधिक अनुभव होता है। हो भी क्यूँ न? जिन कठिन परिस्थितियों में उसकी माँ एवं बड़े भैया ने उसे नर्सिंग की ट्रेनिंग दिलवाई उसे भी वह कहाँ पूरी कर सकी छह महीने रह गए थे उसे पूरी होने में इसी बीच उसकी कोख में तीन माह का बेटा था। जैसे ही उसकी इस स्थिति का जूनियर डॉ. को पता चला उन्होंने सिया से कुछ कहे बिना तार देकर उसके बड़े भैया को बुलाया

और उसे उनके साथ समान सहित बाहर कर दिया। बस यहीं से मरते दम तक न खत्म होने वाले अधूरेपन की यात्रा की शुरूआत हुई। न वह मनन के माता – पिता की बहू स्वीकार की गई और न उसकी माँ मनन को अपना जवाई स्वीकार कर सकी। जैसे – तैसे वे दोनों ही उस शहर को छोड़ कर दूसरे शहर में चले गए उस समय आर्थिक मदद सिया के भैया ने की। मनन अच्छे ओहदे पर थे लेकिन चार वर्ष बीत जाने के बाद भी उनके लिए दूसरे शहर में अच्छी नौकरी का अभाव ही रहा । हाँ तीन फूल जरूर खिल गए। धरती पर गिरने से पहले उन तीनों को सहेज कर रखा और फिर उन नन्हीं आत्माओं को धरती पर गिरने से पहले अपने हाथों में सहेज कर रखा, पर कब तक? जब वो नन्हें पाँव धरती को छूने लगे तब अपने बनाए गए संसार की नींव के पाँव उखड़ने लगे। ये कैसा संयोग इक माँ है जो खुद को मिटा कर अपने जिगर के टुकड़ों का अस्तित्व बनाए रखना चाहती है, वहीं पिता जो परिस्थितियों से पलायन करता है । क्या पलायन करना माँ को नहीं आता? लेकिन उसकी गोद में खिले अजनबी फूल अपने अस्तित्व को खोजने लगते हैं तब वो माँ कैसे इन्कार करे कि वही है उनके अस्तित्व को जन्म देने वाली।

वक्त जिन्हें गर्म झोंकों में पालता है उन्हें कदम – कदम पर लावे से स्नान करना पड़ता है वक्त की कमजोरियाँ उन्हें पनपने ही कहाँ देती है एक गुमनाम सी जिन्दगी जीते – जीते मौत की आगोश में सुकून की नींद सो जाते हैं। क्या अधिकार है उन्हें इस तरह का जीवन जीने का? जिन जिन्दगियों को जन्म देकर सँवार न सके क्या वे दोनों उनके गुनाहगार नहीं है? 'लानत – ए – इश्क' कहे या 'लानत – ए – किस्मत' क्या खिताब दे सिया अपनी जिन्दगी को?

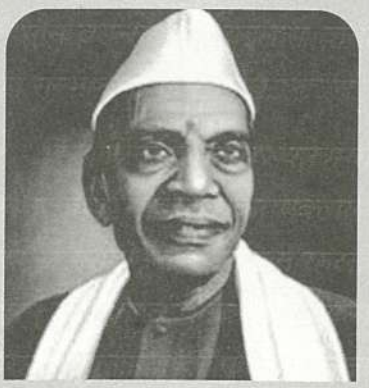

हिन्दी का उद्देश्य यही है, भारत एक रहे अविभाज्य,
ये तो रूस और अमरीका जितना है उसका जन राज्य।
गिरा आप गूंगी असमर्थ, एक भारती बिना हमारी
भारतीयता का क्या अर्थ।

– मैथिलीशरण गुप्त

पुष्पुलता गणेश

कितना अच्छा लगता है

कितना अच्छा लगता है,
मेरी शादी के बाद माँ का मेरे घर आना,
घर के सभी कामों में हाथ बटाना,
मेरे लिए चटनी और अचार बनाना,
सभी सब्जियां, सलाद और फ्रूट चाट बनाना
और सबको खिलाना,
कितना अच्छा लगता है
दिन भर की थकान मिटा देता,
माँ का मुस्कुराता चेहरा।
अपने सभी दुःख दर्द भुलाकर, आफिस से आते ही
पूछना 'आ गए बेटा।'
मेरी हर ख्वाइश का ख्याल रखती माँ,
मुरझाए चेहरों को जिन्दगी देती माँ,
सिखाती है समय पर खाना - खाना और
जीवन को अनुशासित और संयमित बनाना,
माँ चाहती है बच्चों के हर दुःख सुख में साथ निभाना।
बैठे - 2 मिनटों में सब काम कर लेती माँ,
मेरा सारा श्रम हर लेती माँ।
हर पल हर सदस्य का ध्यान रखती माँ।
नहीं चुका सकते कर्ज माँ का इस जीवन में,
पड़ेगा हमें दुबारा इस धरती पर आना।

आज़ादी

विनीत कुमार

अब तो ऊब चुका मैं
इन रस्मों रिवाजों से,
लोगों की मुझपे जो आस है...
मुझे उससे आज़ादी चाहिए....
मैं इसलिए कुछ क्यों करूँ.....
क्योंकि सबने वो किया है.....
सबने जो किया है.....
मुझे उससे आज़ादी चाहिए.....
आज़ादी चाहिए मुझे, आज़ादी चाहिए।

बेबस आँखों से.....
जो ताकती रहती है किसी को.....
जो आता नहीं कभी....
जो मिलता नहीं कभी इनको
उस आस से आज़ादी चाहिए।

अब मुझको कोई इन्सान नहीं चाहिए....
किसी की तलब है जो मुझे.....
मुझे उस तलब से आज़ादी चाहिए....
किसी को ना चाहने की आज़ादी चाहिए....
किसी को ना पाने की आज़ादी चाहिए.....

दुनिया जिन ढर्रों पे मुझे चलाना चाहे....
उन ढर्रों की बरबादी चाहिए....
इस झूठ और सच के बीच फंसी....
इस सोच की बरबादी चाहिए....
आज़ादी चाहिए, मुझे आज़ादी चाहिए।

जीवन उल्लास से जीएं

राजेन्द्र शर्मा

इन्सान अपनी सोच में डूबकर हमेशा यही अभिलाषा करता है कि गरीबी, दुश्मनी, अपयश इन सभी का आगमन उसके जीवन से कोसो दूर रहे । वह अपने जीवन में सदा सुखी ही बना रहे, यह कामना हमेशा बनी रहती है। लेकिन क्या ऐसा संभव है कि हवा भी चले और पेड़ का पत्ता भी न हिले ? हरेक जगह, हर पल और हर क्षण सबके जीवन में बहमूल्य है, अगर इसकी कद्र हम सबके जीवन में कभी भी आ जाए, तो जीवन में कभी भी अंधकार नहीं होगा । क्योंकि, जो दीपक खुद ही जागा हुआ है, वह और दीपों को कैसे बुझा पाएगा? बल्कि उन हजारों दीपकों को और ज्यादा रौशन कर देगा। लेकिन इसके विपरीत जो दीपक खुद ही बुझा है, मुरझाया हुआ है, वह किसी और दीपक को कैसे रौशन कर सकता है ? इंसान सोचता है वह ऊचाईयों के शिखर को चूमे। उसे बिना संघर्ष, बैठे - बिठाए हर वस्तु मिल जाए। उसे इसके लिए कोई कर्म या संघर्ष न करना पड़े । लेकिन ऐसा संभव नहीं है क्योंकि यह संसार सबके लिए एक कर्म भूमि ही है ।

इस अशांति व हर समय भाग दौड़ की जिन्दगी में सुख शांति पाना सबसे अहम् है, और यह शांति ही जीवन की सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि है । शांति के बिना जीवन की किसी अन्य उपलब्धि का कोई महत्व नहीं रहा जाता । और जीवन बिना सुगंध के एक फूल के समान ही बनकर रह जाता है । शांति पाने के लिए अपने दृष्टिकोण को बदलना बेहद जरूरी है ।

प्रसन्नता प्रकृति का सबसे बड़ा उपहार है और इससे होने वाले उल्लास का नाम ही जीवन है । जीवन में सुख - दुख कर्मानुसार आता जाता है इसलिए अनासक्तिपूर्वक जीवन व्यतीत करने वाला सच्चे सुख को पाता है ।

महात्मा गांधी के सबसे प्रिय भजन ''अल्ला तेरो नाम, ईश्वर तेरो नाम, सब की सन्मति दे भगवान'' से हासिल तीन लाइने हैं -

''सबको मिले सुख का वरदान

देह बिना भटके न प्राण

बलवानों को दे ज्ञान,

मैं इस खूब सूरत दुआ पर बस इतना ही कह सकता हूँ - आमीन ।

संविधान में हिन्दी को राष्ट्रभाषा स्वीकार कर लिये जाने के बाद किसी को उसके विरूद्ध आवाज उठाने का अधिकार नहीं है।

- कृष्णा मेनन

कर्ज वाली लक्ष्मी

जोगिंदर सिंह

एक छोटा 15 साल का भाई अपने पापा से, ''पापा - पापा! दीदी के होने वाले ससुर और सास कल आ रहे है अभी जीजाजी ने फोन पर बताया।'' दीदी मतलब उसकी बड़ी बहन की सगाई कुछ कुछ दिन पहले एक अच्छे घर में तय हुई थी।

दीनदयाल जी जो पहले से ही उदास बैठे थे धीरे से बोले.....

''हाँ बेटा उनका कल ही फोन आया था कि वो एक दो दहेज की बात करने आ रहे हैं .... बाले..... दहेज के बारे में आप से जरूरी बात करती है बड़ी मुश्किल से यह अच्छा लड़का मिला था। कल को उनकी दहेज की मांग इतनी ज्यादा हो कि मैं पूरी नहीं कर पाया तो'' कहते - कहते उनकी आँखें भर आयीं।

घर के प्रत्येक सदस्य के मन व चेहरे पर चिंता की लकीरें साफ दिखाई दे रही थी। लड़की भी उदास हो गयी।

खैर अगले दिन समधी आए। उनकी खूब आवभगत की गयी।

कुछ देर बैठने के बाद लड़के के पिता ने लड़की के पिता से कहा, ''दीनदयाल जी अब काम की बात हो जाए।''

दीनदयाल जी की धड़कन बढ़ गयी, ''हाँ। समधीजी, जो आप हुकुम करें।''

लड़के के पिताजी ने धीरे से अपनी कुर्सी दीनदयाल जी ओर खिसकाई और धीरे से उनके कान में बोले ''दीनदयाल जी मुझे दहेज की बात करनी है।''

दीनदयाल जी हाथ जोड़ते हुये आँखों में पानी लिए हुए बोले, ''बताईए समधी जी .... जो आप को उचित लगे.... मैं पूरी कोशिश करूंगा ... ।''

समधी जी ने धीरे से दीनदयाल जी का हाथ अपने हाथों से दबाते हुए बस इतना ही कहा ..... ''आप कन्यादान में कुछ भी देगें या ना भी देंगे .... थोड़ा देंगे या ज्यादा देंगे.... मुझे सब स्वीकार है ... पर कर्ज लेकर आप एक रुपया भी दहेज मत देना .... वो मुझे स्वीकार नहीं .... क्योंकि जो बेटी अपने बाप को कर्ज से डुबो दे वैसी ''कर्ज वाली लक्ष्मी'' मुझे स्वीकार नहीं .... मुझे बिना कर्ज वाली बहू ही चाहिए .... जो मेरा यहाँ आकर मेरी सम्पत्ति को दो गुना कर देगी।''

हिन्दी का ज्ञान राष्ट्रीयता को प्रोत्साहन देता है और हिन्दी अन्य भाषाओं की अपेक्षा सबसे अधिक राष्ट्रभाषा के योग्य है। विभिन्न स्थान विशेष की बोलियाँ अपन - अपने स्थान विशेष में प्रमुख रहेंगी, किन्तु भारत को एक सूत्र में बाँधने के लिए हिन्दी को ही राष्ट्र भाषा होना चाहिए।

- जवाहर लाल नेहरू

बाल बिहारी प्रजापति

साँझ के दिये

तपता सूरज ढलता जैसे ही
दिखते सारे साँझ के दिये
जुगनु करता चम - चम
उसमें दिखता रूप मनोरम
तपता.....

बारिश में बिजली चमकती जब
दिखती आकाश को चीरती
राहगीर चलता दिखता उसको
रास्ता सब।
तपता.....

मंदिर में ,घरों की माता
तुलसी पर दिखता वो दिया
उसमें दिखता
भगवान का रूप सुन्दर
कीट - पतंग आकर्षित
होते उस पर।
तपता.....

जब हटता अमावस्या
का काला साया
दिखता बड़ा ही सुन्दर
गोल चन्दर उसमें दिखता
रूप निखरता गोरी का मुखड़ा
तपता.....

होली

मधु कंसल

परीक्षाएं देखो खत्म हुई भाई
कुछ दिनों के लिए बच्चों ने
ली पढ़ाई से विदाई
देखो - देखो होली बहना है आई
संग अपने रंगों की सौगात है लाई
बहना का देखो यह है कहना
गुलाल तक ही सब सीमित रहना
बस रंग बिरंगा गुलाल ही लगाना
क्योंकि हमने पानी को है बचाना
आज हम नाचेंगे, गायेंगे
और खुशियाँ मनायेंगे
पूरी, कचौरी और गुज्जियाँ खायेंगे
बहना का देखो यह भी है कहना
नशे से तुम सब दूर ही रहना
दिल आज तुम ना किसी का दुखाना
काला रंग ना तुम किसी को लगाना
क्योकि प्यार ही मेरा स्वभाव है
आज के दिन मिटते सभी भेद - भाव हैं
अगले वर्ष मैं फिर आऊँगी
और ढेर सारी सौगातें लाऊँगी।

राजभाषा हिन्दी का प्रगामी प्रयोग

नेक राम भाटिया

सरकारी कामकाज की दृष्टि से प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) हरियाणा का कार्यालय 'क' क्षेत्र में आता है। चण्डीगढ़ स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों में राजभाषा के प्रयोग में इस कार्यालय का अग्रणी स्थान है। हरियाणा एक हिन्दी भाषी प्रदेश है। अत: राजभाषा हिन्दी स्वाभाविक रूप से प्रदेश की मुख्य सम्पर्क भाषा है। कार्यालय के शत-प्रतिशत अधिकारियों को हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त है। राजभाषा हिन्दी को उसके गौरवशाली स्थान पर प्रतिष्ठित करने में सभी अधिकारियों, कर्मचारियों ने उल्लेखनीय योगदान दिया है। पाँच वर्ष पूर्व के आंकड़े और वर्तमान स्थिति का आकलन यदि करें तो स्थिति संतोषप्रद नजर आती हैं और विश्वास बनता है कि प्रगति की दर यदि यही रही तो निश्चित ही शत-प्रतिशत के लक्ष्य को हम प्राप्त कर लेंगे।

राजभाषा हिन्दी के प्रयोग में कार्यालय में हुई प्रगति का आकलन करने हेतु सभी अनुभागों से तिमाही प्रतिवेदन प्राप्त कर उनकी समीक्षा की जाती है। पत्रिका के गत अंक में सितम्बर 2017 तक के प्रतिवेदनों की समीक्षा की गई थी। इस बार 1 अक्टूबर 2017 से 30 जून 2018 तक के आँकड़ों पर आधारित हिन्दी के प्रगामी प्रयोग के विवरण यहाँ दिय जा रहे हैं।

अक्टूबर 2017 से जून 2018 तक 19876 पत्र हिन्दी में प्राप्त हुए। इनमें से सभी पत्रों के उत्तर हिन्दी में दिए गए। इस प्रकार इस मद में शत-प्रतिशत लक्ष्य हासिल किया गया। इस अवधि में कुल 228804 पत्र जारी किए गए। इनमें से हिन्दी में कुल 222179 पत्र जारी किए गये। इसी प्रकार 'क' क्षेत्र में स्थित कार्यालयों को 220312 पत्र, 'ख' क्षेत्र में स्थित कार्यालयों/व्यक्तियों को 1826 पत्र हिन्दी भाषा में लिखे गए।

इस अवधि में तीन हिन्दी कार्यशालाओं जो 27 कार्यदिवसों की थी, का भी आयोजन किया गया। जिनमें 70 कर्मचारियों / अधिकारियों को सरकारी कामकाज में हिन्दी के प्रयोग हेतु प्रशिक्षित एवं प्रेरित किया गया। कार्यशालाओं के अन्त में परीक्षा ली गई जिसमें प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर रहे प्रतिभागियों को उपहार देकर सम्मानित किया गया। कार्यालय में हिन्दी के प्रयोग में हुई प्रगति की समीक्षा हेतु हर तिमाही में राजभाषा कार्याव्यन समिति की बैठक भी आयोजित की जाती है। कार्यालय के सभी शाखा अधिकारी राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य हैं। समिति के अध्यक्ष प्रधान महालेखाकार महोदय हैं। इस अवधि में तीन तिमाही बैठकें आयोजित हुई जिनमें पिछली तिमाही के हिन्दी प्रतिवेदनों की समीक्षा तथा भविष्य में प्रगति हेतु उपायों पर विस्तार से विचार विमर्श किया गया तथा विभिन्न सुझाव दिए गए। जिन शाखाओं / अनुभागों में हिन्दी के प्रयोग में कमी पाई गई उन शाखा अधिकारियों को प्रगति सुनिश्चित करने हेतु आवश्यक सुझाव व निर्देश दिए गए।

इस अवधि में 15 अनुभागों के अभिलेखों का निरीक्षण व जाँच की गई एवं निरीक्षण रिपोर्ट के माध्यम से पाई गई कमियों व त्रुटियों से उन्हें अवगत कराया गया।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक) हरियाणा में दिनांक 14.09.2018 को हिन्दी दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया गया। श्री विशाल बंसल, प्रधान महालेखाकार महोदय ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। माननीय प्रधान महालेखाकार महोदय द्वारा दीपशिखा प्रज्जवलित कर औपचारिक रूप से हिन्दी दिवस का शुभारम्भ किया गया। उसके पश्चात श्री मृणाल चावला, उप महालेखाकार (प्रशासन) ने स्वागत भाषण द्वारा प्रधान महालेखाकार महोदय एवं वहां उपस्थित सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का हार्दिक स्वागत किया। उप महालेखाकार (प्रशासन)ने अपने संदेश में कहा कि केन्द्र सरकार के कार्यालयों में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से ही सितम्बर माह में हिन्दी दिवस मनाया जाता है।

हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य पर कार्यालय भवन में हिंदी पुस्तकों की एक प्रदर्शनी भी लगाई गई।

इस अवसर पर श्री जे.एस. बाली, वरि. लेखा अधिकारी (हिं.क.) द्वारा कार्यालय में हुई राजभाषा प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की गई जिसमें यह विशेष उल्लेख किया गया कि कार्यालय में हिंदी के प्रयोग में पिछले वर्षो में विशेष प्रगति हुई है। इस अवसर पर डॉ. सुरेन्द्र कुमार, वरि. उप महालेखाकार (लेखा) ने माननीय गृहमंत्री श्री राजनाथ सिंह जी का संदेश पढ़ कर सुनाया।

समारोह में राजभाषा नीति के अनुसार गत वर्ष में 20000 से अधिक हिंदी के शब्दों का प्रयोग करने वाले 10 अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रधान महालेखाकार महोदय द्वारा नकद पुरस्कार प्रदान दिए गए तथा उन्हें प्रमाण पत्र देकर भी सम्मानित किया गया। 'नवकिरण' पत्रिका के श्रेष्ठ तीन लेखकों को भी प्रथम द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार स्वरूप नकद राशि तथा सम्मान स्वरूप प्रमाण पत्र दिए गए।

प्रधान महालेखाकार महोदय ने अपने सम्बोधन में सभी कार्मिकों को राजभाषा हिन्दी का ज्यादा से ज्यादा प्रयोग करने के लिए संदेश दिया। उन्होने स्वयं भी राजभाषा हिन्दी के प्रति अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त की। समारोह के अंत में श्री जे.एस. बाली, वरि. लेखा अधिकारी (हि.क.) ने प्रधान महालेखाकार महोदय एवं अन्य सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को धन्यवाद दिया।

झलकियाँ

हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में
आयोजित हिन्दी पुस्तक प्रदर्शनी
का अवलोकन करते अधिकारीगण।

दीप प्रज्वलित करके
हिन्दी दिवस समारोह का उद्घाटन
करते हुए श्री विशाल बंसल
प्रधान महालेखाकार महोदय

हिन्दी दिवस समारोह के अवसर पर
अपना संदेश देते हुए
श्री विशाल बंसल
प्रधान महालेखाकार महोदय

झलकियाँ

हिन्दी पत्रिका 'नवकिरण' के
36 वें अंक का लोकार्पण करते हुए
श्रीमती नमिता सेखों तत्कालीन
प्रधान महालेखाकार महोदया
तथा अन्य अधिकारीगण।

सहायता अनुदान द्वारा प्रकाशित
श्री कुमार शर्मा 'अनिल' के
कहानी संग्रह 'मेरी पुरस्कृत कहानियाँ'
का लोकार्पणकरते हुए
श्रीमती नमिता सेखों तत्कालीन
प्रधान महालेखाकार महोदया
तथा अन्य अधिकारीगण।

सहायता अनुदान द्वारा प्रकाशित
श्री राजेश 'पंकज' के
कहानी संग्रह 'कहीं देर न हो जाये'
का लोकार्पण करते हुए
श्रीमती नमिता सेखों तत्कालीन
प्रधान महालेखाकार महोदया
तथा अन्य अधिकारीगण।

झलकियाँ

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में कार्यालय में आयोजित योग शिविर में योगाभ्यास करते हुए अधिकारीगण।

महिला यौन उत्पीड़न के विषय पर चर्चा में भाग लेते कार्यालय के महिला अधिकारी एवं कर्मचारीगण।

कार्यालय में आयोजित रक्त दान शिविर में भाग लेते हुए अधिकारी एवं कर्मचारीगण।

झलकियाँ

सर्तकता जागरूकता सप्ताह के उपलक्ष्य में कर्मचारियों व अधिकारियों को भ्रष्टाचार विरोधी शपथ दिलाते श्री विशाल बंसल प्रधान महालेखाकार महोदय

अग्निशमन विभाग के अधिकारी कार्यालय के अधिकारियों व कर्मचारियों को अग्निशमन यंत्रों के संचालन का अभ्यास कराते हुए।

कार्यालय द्वारा पेंशन अदालत के आयोजन के संबंध में आयोजित बैठक में भाग लेते हरियाणा के वित्तमंत्री कै. अभिमन्यु तथा अधिकारीगण।

साँस्कृतिक एवं अन्य गतिविधियां

राजेन्द्र भसीन

(1) महिला यौन उत्पीड़न व्याख्यान : 25 सितम्बर 2017 को माननीय श्रीमति कमलजीत वालिया, सचिव (सी.बी.सी.टी) तथा डॉ. शशि प्रभा द्वारा कार्यालय में महिला उत्पीड़न विषय पर व्याख्यान दिया गया।

(2) सर्तकता जागरूकता सप्ताह : कार्यालय परिसर में दि. 30.10.2017 से 03.11.2017 तक सर्तकता जागरूकता सप्ताह मनाया गया । इस दौरान विभिन्न चित्रकला, स्लोगन. भाषण आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन कराया गया । तथा प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान पाने वाले प्रतियागियों को पुरस्कृत किया गया ।

(3) कार्यालय परिसर में राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में 31.10.2017 को सरदार बल्लभ भाई पटेल की जयंती मनायी गयी ।

(4) दिनांक 19.11.2017 से 25.11.2017 तक सांप्रदायिक सदभावना अभियान तथा निधि / धन जुटाने हेतु सप्ताह मनाया गया ।

(5) सशस्त्र सेनाओं का झंडा निधि दिवस दिनांक 07.12.2017 को मनाया गया ।

(6) राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की पुण्य तिथि के अवसर पर शहीदी दिवस के उपलक्ष्य में 30 जनवरी 2018 को दो मिनट का मौन रखा गया ।

(7) पी.जी.आई चण्डीगढ़ द्वारा दिनांक 07.05.2018 को कार्यालय में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया जिसमें एक सौ एक कर्मचारियों ने अपना रक्तदान किया ।

(8) अग्निशमन कार्यालय, सेक्टर 32, चण्डीगढ़ के फायर अफसर द्वारा दिनांक 16 मई, 2018 को आपदा प्रबंधन पर एक अग्निशामक अभ्यास परीक्षण कराया गया ।

(9) आतंकवाद निरोधी दिवस : पूर्व प्रधानमन्त्री स्व. राजीव गांधी की पुण्यतिथि के अवसर पर 21 मई 2018 को कार्यालय में आतंकवाद निरोधी दिवस मनाया गया । इस अवसर पर अधिकारियों व कर्मचारियों द्वारा शपथ ग्रहण की गई।

(10) दिनांक 21 जून 2018 को द्वितीय अंर्तराष्ट्रीय योग दिवस की पूर्व संध्या पर इस कार्यालय तथा लेखापरीक्षा कार्यालय के योग विशेषज्ञों द्वारा एक व्याख्यान तथा योग प्रदर्शन किया गया ।

(11) स्वतंत्रता दिवस समारोह : 15 अगस्त 2018 को कार्यालय परिसर में स्वतंत्रता दिवस समारोह मनाया गया तथा एक सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन कराया गया । इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि स्टेट बैंक ऑफ इंडिया चंडीगढ़ के मुख्य महाप्रबंधक थे ।

(12) सदभावना दिवस : पूर्व प्रधानमन्त्री राजीव गांधी की जन्म तिथि के अवसर पर कार्यालय परिसर में दि. 20 अगस्त 2018 को सदभावना दिवस समारोह मनाया गया तथा इस अवसर पर सभी कर्मचारियों ने शपथ ग्रहण की ।

संजीव कुमार

प्रशासनिक शब्दावली

टिप्पणी	Note
टिप्पणी – लेखन	Noting
कार्रवाई	Action
वस्तुस्थिति	Condition
प्रशासनिक	Administrative
नेमी	Routine
स्वतः पूर्ण	Self-dependant/Self-contained Note
स्तर	Level
उपर्युक्त	Above-said
अनिवार्य	Must, unavoidable, Compulsory
मानक	Standard
रोजमर्रा	Daily
विचाराधीन आवती	Receipt under-consideration
मुद्दा	Point
सुझाव	Suggestion
हाशिया	Margin
अनुच्छेद	Paragraph
स्पष्ट भूल	Obvious mistake
गलत – बयानी	Wrong statement
आलोचना	Criticism
अभिमत	Opinion
शिष्ट	Polite
संतुलित	Balanced
व्यक्तिगत – दोषारोपण	Personal Allegation
असाधारण	Extra-ordinary
तथ्यों का क्रमिक सार	Running summary of the facts
आवरण	Cover
हाशिया टिप्पणी	Marginal note
वित्तीय	Financial
अधिकांश तौर पर	Mostly
संशोधित	Amended
पारिश्रमिक	Remuneration
पड़ताल करना	To examine
भुगतान	Payment
पारित करना	To pass
परिशिष्ट	Appendix
शासन	Govt., Governance
शासन करना	to govern
शासन व्यवस्था	Machinery of Govt.
शासक	Ruler
शासी निकाय	Governing body
शास्ति	Penalty
अनुशासन	Discipline
अनुशासन – भंग	Breach of discipline
अनुशासनहीनता	Indiscipline
अनुशासनिक कार्रवाई	Disciplinary action
पत्र	Letter, Paper
पत्रकार	Journalist
पत्रकार गैलरी	Press-gallery
पत्रकार दीर्घा	Press-gallery
पत्रकार – सम्मेलन	Press-conference
पत्र कार्ड	Letter-card
पत्र – पेटी	Letter-box
पत्र – पैड	Letter-pad
पत्र व्यवहार	Correspondence
पत्र शीर्ष	Letter-head
पत्र – सार	Briefing
पत्राचार – भाग	Correspondence-portion
पत्र का कलेवर	Body of the letter
पत्रिका	Periodical, Journal, Magazine
मासिक – पत्रिका	Monthly (magazine)

सेवा निवृत्ति

(31.01.2018 से 30.06.2018 तक)

राजीव कुमार सिंह

क्र. सं.	नाम सर्व श्री/श्रीमति	पदनाम	सेवानिवृत्ति तिथि
1.	अमर सिंह बलहेरिया	व०ले०अ०	31.01.2018
2.	केवल सिंह ठाकुर	व० लेखाकार	31.01.2018
3.	पंचम सिंह	व० लेखाकार	31.01.2018
4.	महाबीर सिंह	व० लेखाकार	31.01.2018
5.	स्वरूप सिंह	स०ले०अ०	28.02.2018
6.	ओम प्रकाश	स०ले०अ०	28.02.2018
7.	अशोक कुमार	व० लेखाकार	28.02.2018
8.	कमल कांत बलहोत्रा	व०ले०अ०	31.03.2018
9.	शशपाल सिंह	व० लेखाकार	31.03.2018
10.	राज कुमारी	व० लेखाकार	31.03.2018
11.	राकेश गोयल	व०ले०अ०	30.04.2018
12.	शमशेर सिंह	स०ले०अ०	30.04.2018
13.	सुरजीत कुमार बाली	व० लेखाकार	30.04.2018
14.	मधु बांगा	पर्यवेक्षक	31.05.2018
15.	प्रकाश चंद	व० लेखाकार	31.05.2018
16.	उत्तम चंद	व० लेखाकार	31.05.2018
17.	कमल बजाज	व०ले०अ० (ऐच्छिक)	17.04.2018.
18.	आशा बहल	ले०अ० (ऐच्छिक)	17.04.2018
19.	कृष्ण कांत	व०ले०अ०	30.06.2018
20.	शक्ति कुमार	व० लेखाकार	30.06.2018

श्रद्धांजली

जीवन एवं मरण परमात्मा के हाथ है। मृत्यु के क्रूर हाथों जिन प्रिय सहकर्मियों का विछोह हुआ, 'नवकिरण' परिवार उन को विनम्र श्रद्धांजली देता है। परम पिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्माओं को शान्ति प्रदान करें तथा शोकाकुल परिजनों को पीड़ा से उबरने की शक्ति प्रदान करे।

	नाम	पदनाम	मृत्यु तिथि
1.	भारत भूषण शर्मा	व०ले०अ०	16.02.2018

अंग्रेजी माध्यम भारतीयों की शिक्षा में सबसे बड़ा कठिन विघ्न है। सभ्य संसार के किसी भी जन समुदाय की शिक्षा का माध्यम विदेशी भाषा नहीं है।

– महामना मदनमोहन मालवीय

हिंदी वह धागा है जो विभिन्न मातृ भाषाओं रूपी फूलों को पिरो कर भारत माता के लिए सुन्दर हार का सृजन करेगी।

– डॉ० जाकिर हुसैन

चाहे कुछ भी हो एक दिन हिन्दी देश की राजभाषा बन कर रहेगी। जो हिन्दी अपनायेगा वहीं आगे चलकर अखिल भारतीय सेवा में जा सकेगा और देश का नेतृत्व भी वही कर सकेगा, जो हिन्दी जानता होगा।

– नीलम संजीवा रेड्डी

मैं हिन्दी का प्रेमी हूँ। साँस्कृतिक जीवन में हिन्दी के महत्व को भली भांति समझता हूँ। भारतीय एकता का मुख्य साधन हिन्दी बन चुकी है। इसलिए भरतीय राष्ट्र के विरोध में अपनी शक्ति का प्रयोग कर रहें हैं।

– डॉ० सुनीति कुमार चाटुर्ज्या

हिन्दी दिवस समारोह में कविता पाठ करते हुए कार्यालय की अधिकारी

हिन्दी दिवस समारोह के अवसर पर प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी) हरियाणा महोदय ने कर्मचारियों को पुरस्कार देकर प्रोत्साहित किया।

वर्ष : 2018

अंक : 37वाँ

नवकिरण

(अर्द्धवार्षिक)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी) हरियाणा, चण्डीगढ़